وَقَالَ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا الْمَلٰٓئِكَةُ اَوْ نَرٰى رَبَّنَا ؕ لَقَدِ اسْتَكْبَرُوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ وَعَتَوْ عُتُوًّا كَبِيْرًا ﴿٢١﴾

21. और जो लोग हमारी मुलाक़ात की उम्मीद नहीं रखते केहते हैं कि हमारे ऊपर फ़रिश्ते क्यों नहीं उतारे गए या हम अपने रबको (अपनी आँखोंसे) देख लेते (तो फिर जरूर ईमान ले आते), ह़क़ीक़त में येह लोग अपने दिलों में (अपने आपको) बहुत बड़ा समझने लगे हैं और ह़दसे बढ़ कर सरकशी कर रहे हैं।

يَوْمَ يَرَوْنَ الْمَلٰٓئِكَةَ لَا بُشْرٰى يَوْمَئِذٍ لِّلْمُجْرِمِيْنَ وَ يَقُوْلُوْنَ حِجْرًا مَّحْجُوْرًا ﴿٢٢﴾

22. जिस दिन वोह फ़रिश्तों को देखेंगे (तो) उस दिन मुजरिमों के लिए चंदां ख़ुशीकी बात न होगी बल्कि वोह (उन्हें देख कर डरते हुए) कहेंगे : कोई रोकवाली आड़ होती (जो हमें उनसे बचा लेती या फ़रिश्ते उन्हें देख कर कहेंगे कि तुम पर दाख़िलए जन्नत क़त्अ़न मम्नूअ़ है)।

وَقَدِمْنَآ اِلٰى مَا عَمِلُوْا مِنْ عَمَلٍ فَجَعَلْنٰهُ هَبَآءً مَّنْثُوْرًا ﴿٢٣﴾

23. और (फिर) हम उन आ'मालकी तरफ़ मुतवज्जे होंगे जो (बजो़'मे ख़ीश) उन्होंने (ज़िन्दगी में) किए थे तो हम उन्हें बिखरा हुवा ग़ुबार बना देंगे।

اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ يَوْمَئِذٍ خَيْرٌ مُّسْتَقَرًّا وَّاَحْسَنُ مَقِيْلًا ﴿٢٤﴾

24. उस दिन अह्ले जन्नत की क़ियामगाह (भी) बेहतर होगी और आरामगाह भी ख़ूबतर (जहां वोह ह़िसाबो किताब की दोपहर के बाद जा कर क़ैलूला करेंगे)।

وَ يَوْمَ تَشَقَّقُ السَّمَآءُ بِالْغَمَامِ وَنُزِّلَ الْمَلٰٓئِكَةُ تَنْزِيْلًا ﴿٢٥﴾

25. और उस दिन आस्मान फट कर बादल (की तरह धुंएं) में बदल जाएगा और फ़रिश्ते गिरोह दर गिरोह उतारे जाएंगे।

اَلْمُلْكُ يَوْمَئِذِ ِالْحَقُّ لِلرَّحْمٰنِ ؕ وَ كَانَ يَوْمًا عَلَى الْكٰفِرِيْنَ عَسِيْرًا ﴿٢٦﴾

26. उस दिन सच्ची हुक्मरानी सिर्फ़ (ख़ुदाए) रह़मानकी होगी, और वोह दिन काफ़िरों पर सख़्त (मुश्किल) होगा।

وَ يَوْمَ يَعَضُّ الظَّالِمُ عَلٰى يَدَيْهِ يَقُوْلُ يٰلَيْتَنِي اتَّخَذْتُ مَعَ الرَّسُوْلِ سَبِيْلًا ﴿٢٧﴾

27. और उस दिन हर ज़ालिम (ग़ुस्से और ह़सरत से) अपने हाथों को काट काट खाएगा (और) कहेगा : काश! मैंने रसूले (अकरम ﷺ) की मइय्यत में (आ कर हिदायत का) रास्ता इख़्तियार कर लिया होता।

يٰوَيْلَتٰى لَيْتَنِىْ لَمْ اَتَّخِذْ فُلَانًا خَلِيْلًا ﴿٢٨﴾

28. हाए अफ़्सोस ! काश मैंनें फ़लां शख़्सको दोस्त न बनाया होता।

لَقَدْ اَضَلَّنِىْ عَنِ الذِّكْرِ بَعْدَ اِذْ جَآءَنِىْ ؕ وَكَانَ الشَّيْطٰنُ لِلْاِنْسَانِ خَذُوْلًا ﴿٢٩﴾

29. बेशक उसने मेरे पास नसीह़त आ जाने के बाद मुझे उससे बेहका दिया, और शैतान इन्सान को (मुसीबत के वक़्त) बेयारो मददगार छोड़ देनेवाला है।

وَقَالَ الرَّسُوْلُ يٰرَبِّ اِنَّ قَوْمِى اتَّخَذُوْا هٰذَا الْقُرْاٰنَ مَهْجُوْرًا ﴿٣٠﴾

30. और रसूले (अकरम ﷺ) अ़र्ज़ करेंगे : ऐ रब ! बेशक मेरी क़ौमने इस क़ुरआन को बिलकुल ही छोड़ रखा था।

وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِىٍّ عَدُوًّا مِّنَ الْمُجْرِمِيْنَ ؕ وَكَفٰى بِرَبِّكَ هَادِيًا وَّنَصِيْرًا ﴿٣١﴾

31. और इसी तरह़ हमने हर नबी के लिए जराइम शिआ़र लोगोंमें से (उनके) दुश्मन बनाए थे (जो उनके पयग़म्बराना मिशन की मुख़ालिफ़त करते और इस तरह़ ह़क़ और बातिल क़ुव्वतों के दरमियान तज़ाद पैदा होता जिससे इन्क़िलाब के लिए साज़गार फ़िजा तैयार हो जाती थी) और आपका रब हिदायत करने और मदद फ़रमाने के लिए काफ़ी है।

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ الْقُرْاٰنُ جُمْلَةً وَّاحِدَةً ۚ كَذٰلِكَ ۚ لِنُثَبِّتَ بِهٖ فُؤَادَكَ وَرَتَّلْنٰهُ تَرْتِيْلًا ﴿٣٢﴾ ع

32. और काफ़िर केहते हैं कि इस (रसूल) पर क़ुरआन एक ही बार (यकजा करके) क्यों नहीं उतारा गया यूं (थोड़ा थोड़ा कर के उसे तदरीजन इस लिए उतारा गया है) ताकि हम उस से आपके क़ल्बे (अत्हर) को क़ुव्वत बख़्शें और (इसी वजहसे) हमने उसे ठहर ठहर कर पढ़ा है (ताकि आप को हमारे पयग़ाम के ज़रीए़ बार बार सुकूने क़ल्ब मिलता रहे)।

وَلَا يَاْتُوْنَكَ بِمَثَلٍ اِلَّا جِئْنٰكَ بِالْحَقِّ وَاَحْسَنَ تَفْسِيْرًا ؕ ﴿٣٣﴾

33. और येह (क़ुफ़्फ़ार) आपके पास कोई (ऐसी) मिसाल (सवाल और ए'तिराज़ के तौर पर) नहीं लाते मगर हम आपके पास (उसके जवाब में) ह़क़ और (उससे) बेहतर वज़ाह़तका बयान ले आते हैं।

اَلَّذِيۡنَ يُحۡشَرُوۡنَ عَلٰى وُجُوۡهِهِمۡ
اِلٰى جَهَنَّمَ ۙ اُولٰٓئِكَ شَرٌّ مَّكَانًا وَّ
اَضَلُّ سَبِيۡلًا ؏ ٣٤

34. (येह) ऐसे लोग हैं जो अपने चेहरों के बल दोज़ख़ की तरफ़ हांके जाएंगे येही लोग हैं जो ठिकाने के लिहाज़से निहायत बुरे और रास्ते से (भी) बहुत बेहके हुए हैं।

وَلَقَدۡ اٰتَيۡنَا مُوۡسَى الۡكِتٰبَ وَجَعَلۡنَا
مَعَهٗۤ اَخَاهُ هٰرُوۡنَ وَزِيۡرًا ۚ ٣٥

35. और बेशक हमने मूसा (عليه السلام) को किताब अ़ता फ़रमाई और हमने उनके साथ (उनकी मुआ़विनत के लिए) उनके भाई हारून (عليه السلام) को वज़ीर बनाया।

فَقُلۡنَا اذۡهَبَاۤ اِلَى الۡقَوۡمِ الَّذِيۡنَ
كَذَّبُوۡا بِاٰيٰتِنَا ؕ فَدَمَّرۡنٰهُمۡ
تَدۡمِيۡرًا ؕ ٣٦

36. फिर हमने कहा तुम दोनों उस क़ौम के पास जाओ जिन्होंने हमारी आयतोंको झुटलाया है (जब वोह हमारी तक्ज़ीब से फिर भी बाज़ न आए) तो हमने उन्हें बिलकुल ही हलाक कर डाला।

وَقَوۡمَ نُوۡحٍ لَّمَّا كَذَّبُوا الرُّسُلَ
اَغۡرَقۡنٰهُمۡ وَجَعَلۡنٰهُمۡ لِلنَّاسِ اٰيَةً ؕ وَ
اَعۡتَدۡنَا لِلظّٰلِمِيۡنَ عَذَابًا اَلِيۡمًا ۚ ٣٧

37. और नूह़ (عليه السلام) की क़ौम को (भी), जब उन्होंने रसूलों को झुटलाया (तो) हमने उन्हें ग़र्क़ कर डाला और हमने उन्हें (दूसरे) लोगों के लिए निशाने इब्रत बना दिया, और हमने ज़ालिमों के लिए दर्दनाक अ़ज़ाब तैयार कर रखा है।

وَّعَادًا وَّثَمُوۡدَا۟ وَاَصۡحٰبَ الرَّسِّ
وَقُرُوۡنًاۢ بَيۡنَ ذٰلِكَ كَثِيۡرًا ٣٨

38. और आ़द और समूद और बाशिन्दगाने रस को, और उनके दरमियान बहुत सी (और) उम्मतों को (भी हलाक कर डाला)।

وَكُلًّا ضَرَبۡنَا لَهُ الۡاَمۡثَالَ ۫ وَكُلًّا
تَبَّرۡنَا تَتۡبِيۡرًا ٣٩

39. और हमने (उनमें से) हर एक (की नसीह़त) के लिए मिसालें बयान कीं और (जब वोह सरकशी से बाज़ न आए तो) हमने उन सब को नीस्तो नाबूद कर दिया।

وَلَقَدۡ اَتَوۡا عَلَى الۡقَرۡيَةِ الَّتِىۡۤ
اُمۡطِرَتۡ مَطَرَ السَّوۡءِ ؕ اَفَلَمۡ
يَكُوۡنُوۡا يَرَوۡنَهَا ۚ بَلۡ كَانُوۡا لَا
يَرۡجُوۡنَ نُشُوۡرًا ٤٠

40. और बेशक येह (कुफ़्फ़ार) इस बस्ती पर से गुज़रे हैं जिस पर बुरी तरह़ (पथ्थरोंकी) बारिश बरसाई गई थी, तो क्या येह इस (तबाह शुदह बस्ती) को देखते न थे बल्कि येह तो (मरने के बाद) उठाए जाने की उम्मीद ही नहीं रखते।

وَ اِذَا رَاَوْكَ اِنْ يَّتَّخِذُوْنَكَ اِلَّا هُزُوًا ؕ اَهٰذَا الَّذِيْ بَعَثَ اللّٰهُ رَسُوْلًا ﴿۴۱﴾

41. और (ऐ ह़बीबे मुकर्रम !) जब (भी) वोह आपको देखते हैं आपका मज़ाक़ उड़ाने के सिवा कुछ नहीं करते (और केहते हैं :) क्या येही वोह (शख़्स) है जिसे अल्लाहने रसूल बना कर भेजा है।

اِنْ كَادَ لَيُضِلُّنَا عَنْ اٰلِهَتِنَا لَوْلَاۤ اَنْ صَبَرْنَا عَلَيْهَا ؕ وَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ حِيْنَ يَرَوْنَ الْعَذَابَ مَنْ اَضَلُّ سَبِيْلًا ﴿۴۲﴾

42. क़रीब था कि येह हमें हमारे मा'बूदों से बेहका देता अगर हम उन (की परस्तिश) पर साबित क़दम न रेहते, और वोह अ़नक़रीब जान लेंगे जिस वक़्त अ़ज़ाब देखेंगे कि कौन गुमराह था।

اَرَءَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ اِلٰهَهٗ هَوٰىهُ ؕ اَفَاَنْتَ تَكُوْنُ عَلَيْهِ وَكِيْلًا ﴿۴۳﴾ ۙ

43. क्या आपने उस शख़्सको देखा है जिसने अपनी ख़्वाहिशे नफ़्सको अपना मा'बूद बना लिया है तो क्या आप उस पर निगेहबान बनेंगे।

اَمْ تَحْسَبُ اَنَّ اَكْثَرَهُمْ يَسْمَعُوْنَ اَوْ يَعْقِلُوْنَ ؕ اِنْ هُمْ اِلَّا كَالْاَنْعَامِ بَلْ هُمْ اَضَلُّ سَبِيْلًا ﴿۴۴﴾ ع ۴ ۱۰ ۲

44. क्या आप येह ख़याल करते हैं कि उनमें से अक्सर लोग सुनते या समझते हैं, (नहीं) वोह तो चौपायों की मानिन्द (हो चुके) हैं बल्कि उन से भी बदतर गुमराह हैं।

اَلَمْ تَرَ اِلٰى رَبِّكَ كَيْفَ مَدَّ الظِّلَّ ۚ وَلَوْ شَآءَ لَجَعَلَهٗ سَاكِنًا ۚ ثُمَّ جَعَلْنَا الشَّمْسَ عَلَيْهِ دَلِيْلًا ﴿۴۵﴾ ۙ

45. क्या आपने अपने रब (की क़ुदरत) की तरफ़ निगाह नहीं डाली कि वोह किस तरह़ (दोपहर तक) साया दराज़ करता है और अगर वोह चाहता तो उसे ज़रूर साकिन कर देता फिर हमने सूरजको उस (साए) पर दलील बनाया है।

ثُمَّ قَبَضْنٰهُ اِلَيْنَا قَبْضًا يَّسِيْرًا ﴿۴۶﴾

46. फिर हम आहिस्ता आहिस्ता उस (साए) को अपनी तरफ़ खींच कर समेट लेते हैं।

وَهُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ لِبَاسًا وَّالنَّوْمَ سُبَاتًا وَّ جَعَلَ النَّهَارَ نُشُوْرًا ﴿۴۷﴾

47.और वोही है जिसने तुम्हारे लिए रातको पोशाक (की तरह़ ढांप लेनेवाला) बनाया और नींदको (तुम्हारे लिए) आराम (का बाइ़स) बनाया और दिनको (कामकाज के लिए) उठ खड़े होने का वक़्त बनाया।

وَ هُوَ الَّذِیۡۤ اَرۡسَلَ الرِّیٰحَ بُشۡرًۢا بَیۡنَ یَدَیۡ رَحۡمَتِهٖ ۚ وَ اَنۡزَلۡنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً طَهُوۡرًا ۙ﴿۴۸﴾

48. और वोही है जो अपनी रह़मत (की बारिश) से पहले हवाओंको ख़ुशख़बरी बना कर भेजता है, और हम ही आस्मान से पाक (साफ़ करनेवाला) पानी उतारते हैं।

لِّنُحۡیِیَ بِهٖ بَلۡدَةً مَّیۡتًا وَّ نُسۡقِیَهٗ مِمَّا خَلَقۡنَاۤ اَنۡعَامًا وَّ اَنَاسِیَّ کَثِیۡرًا ﴿۴۹﴾

49. ताकि उसके ज़रीए हम (किसी भी) मुरदह शहरको ज़िन्दगी बख़्शें और (मज़ीद येह कि) हम येह (पानी) अपने पैदा किए हुए बहुतसे चौपायों और (बादिया नशीन) इन्सानों को पिलाएं।

وَ لَقَدۡ صَرَّفۡنٰهُ بَیۡنَهُمۡ لِیَذَّکَّرُوۡا ۫ فَاَبٰۤی اَکۡثَرُ النَّاسِ اِلَّا کُفُوۡرًا ﴿۵۰﴾

50. और बेशक हम उस (बारिश) को उनके दरमियान (मुख़्तलिफ़ शहरों और वक़्तों के ह़िसाबसे) घुमाते (रेहते) हैं ताकि वोह ग़ौरो फ़िक्र करें फिर भी अक्सर लोगों ने बजुज़ ना शुक्रीके (कुछ) क़ुबूल न किया।

وَ لَوۡ شِئۡنَا لَبَعَثۡنَا فِیۡ کُلِّ قَرۡیَةٍ نَّذِیۡرًا ﴿۵۱﴾

51. और अगर हम चाहते तो हर एक बस्ती में एक डर सुनानेवाला भेज देते।

فَلَا تُطِعِ الۡکٰفِرِیۡنَ وَ جَاهِدۡهُمۡ بِهٖ جِهَادًا کَبِیۡرًا ﴿۵۲﴾

52. पस (ऐ मर्दे मोमिन !) तू काफ़िरों का केहना न मान और तू इस (क़ुर्आनकी दा'वत और दलाइल) के ज़रीए उनके साथ बड़ा जिहाद कर।

وَ هُوَ الَّذِیۡ مَرَجَ الۡبَحۡرَیۡنِ هٰذَا عَذۡبٌ فُرَاتٌ وَّ هٰذَا مِلۡحٌ اُجَاجٌ ۚ وَ جَعَلَ بَیۡنَهُمَا بَرۡزَخًا وَّ حِجۡرًا مَّحۡجُوۡرًا ﴿۵۳﴾

53. और वोही है जिसने दो दरियाओं को मिला दिया। येह (एक) मीठा निहायत शीरीं है और येह (दूसरा) खारी निहायत तल्ख़ है। और उसने उन दोनों के दरमियान एक परदा और मज़बूत रुकावट बना दी।

وَ هُوَ الَّذِیۡ خَلَقَ مِنَ الۡمَآءِ بَشَرًا فَجَعَلَهٗ نَسَبًا وَّ صِهۡرًا ؕ وَ کَانَ رَبُّکَ قَدِیۡرًا ﴿۵۴﴾

54.और वोही है जिसने पानी (की मानिन्द एक नुत्फ़े) से आदमीको पैदा किया फिर उसे नसब और सुसराल (की क़राबत) वाला बनाया, और आपका रब बड़ी क़ुदरत वाला है।

وَ یَعۡبُدُوۡنَ مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ مَا

55. और वोह (कुफ़्फ़ार) अल्लाह के सिवा उन (बुतों)

لَا يَنْفَعُهُمْ وَلَا يَضُرُّهُمْ ۗ وَكَانَ الْكَافِرُ عَلَىٰ رَبِّهِ ظَهِيرًا ﴿٥٥﴾

की इ़बादत करते हैं जो उन्हें न (तो) नफ़ा' पहुंचा सकते हैं और न (ही) उन्हें नुक़्सान पहुंचा सकते हैं, और काफ़िर अपने रब (की ना फ़रमानी) पर (हमेशा शैतानका) मददगार होता है।

وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا مُبَشِّرًا وَنَذِيرًا ﴿٥٦﴾

56. और हमने आपको नहीं भेजा मगर (अल्लाह के इताअ़त गुज़ार बंदोंको) ख़ुशख़बरी सुनानेवाला और (बग़ावत शिआ़र लोगों को) डर सुनानेवाला बना कर।

قُلْ مَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِلَّا مَنْ شَاءَ أَنْ يَتَّخِذَ إِلَىٰ رَبِّهِ سَبِيلًا ﴿٥٧﴾

57.आप फ़रमा दीजिए कि मैं तुमसे इस (तबलीग़) पर कुछ भी मुआ़वज़ा नहीं मांगता मगर जो शख़्स अपने रब तक (पहुंचने का) रास्ता इख़्तियार करना चाहता है (कर ले)।

وَتَوَكَّلْ عَلَى الْحَيِّ الَّذِي لَا يَمُوتُ وَسَبِّحْ بِحَمْدِهِ ۚ وَكَفَىٰ بِهِ بِذُنُوبِ عِبَادِهِ خَبِيرًا ﴿٥٨﴾ مع ٨

58. और आप उस (हमेशा) ज़िन्दा रेहनेवाले (रब) पर भरोसा कीजिए जो कभी नहीं मरेगा और उसकी ता'रीफ़ के साथ तस्बीह़ करते रहिए, और उसका अपने बंदों के गुनाहोंसे बा ख़बर होना काफ़ी है।

الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ ۚ الرَّحْمَٰنُ فَاسْأَلْ بِهِ خَبِيرًا ﴿٥٩﴾

59. जिसने आस्मानी कुर्रों और ज़मीन को और उस (काइनात) को जो उन दोनों के दरमियान है छे अद्‌वार में पैदा फ़रमाया ★ फिर वोह (ह़स्बे शान) अर्श पर जलवा अफ़रोज हुवा (वोह) रह़मान है (ऐ मा'रेफ़ते ह़क़ के तालिब) तू उसके बारे में किसी बा ख़बर से पूछ (बे ख़बर उस का ह़ाल नहीं जानते)।

وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ اسْجُدُوا لِلرَّحْمَٰنِ قَالُوا وَمَا الرَّحْمَٰنُ أَنَسْجُدُ لِمَا تَأْمُرُنَا وَزَادَهُمْ نُفُورًا ﴿٦٠﴾ السجدة ع ٥ ١٦ ٣

60. और जब उनसे कहा जाता है कि तुम रह़मान को सज्दा करो तो वोह (मुन्किरीने ह़क़) केहते हैं कि रह़मान क्या (चीज़) है ? क्या हम उसीको सज्दा करने लग जाएं जिसका आप हमें हुक्म दें और उस (हुक्म) ने उन्हें नफ़रत में और बढ़ा दिया।

★(सित्तह अय्याम से मुराद छे अद्‌वारे तख़्लीक़ हैं, मा'रूफ़ मा'ना में छे दिन नहीं क्यों कि यहां तो खूद ज़मीन और जुमला आस्मानी कुर्रों, कहकशाओं, सितारों, सय्यारों और ख़लाओंकी पैदाइश का ज़माना बयान हो रहा है उस वक़्त रात और दिन का वुजूद कहां था?)

تَبٰرَكَ الَّذِیْ جَعَلَ فِی السَّمَآءِ
بُرُوْجًا وَّ جَعَلَ فِیْهَا سِرٰجًا وَّ قَمَرًا
مُّنِیْرًا ﴿٦١﴾

61. वोही बड़ी बरकतो अ़ज़मतवाला है जिसने आस्मानी काइनात में (कहकशाओं की शक्ल में) समावी कुर्रों की वसीअ़ मन्ज़िलें बनाईं और उसमें (सूरज को रौशनी और तपिश देनेवाला) चिराग़ बनाया और (इस निज़ामे शम्सी के अंदर)चमकनेवाला चांद बनाया।

وَ هُوَ الَّذِیْ جَعَلَ الَّیْلَ وَ النَّهَارَ
خِلْفَةً لِّمَنْ اَرَادَ اَنْ یَّذَّكَّرَ اَوْ
اَرَادَ شُكُوْرًا ﴿٦٢﴾

62. और वोही ज़ात है जिसने रात और दिनको एक दूसरे के पीछे गर्दिश करनेवाला बनाया उस के लिए जो ग़ौरो फ़िक्र करना चाहे या शुक्र गुज़ारी का इरादा करे (इन तख़्लीकी क़ुदरतों में नसीह़तो हिदायत है)।

وَ عِبَادُ الرَّحْمٰنِ الَّذِیْنَ یَمْشُوْنَ
عَلَى الْاَرْضِ هَوْنًا وَّ اِذَا خَاطَبَهُمُ
الْجٰهِلُوْنَ قَالُوْا سَلٰمًا ﴿٦٣﴾

63.और (ख़ुदाए) रह़मानके (मक़्बूल) बन्दे वोह हैं जो ज़मीन पर आहिस्तगी से चलते हैं और जब उनसे जाहिल (अख्खड़) लोग (ना पसंदीदह) बात करते हैं तो वोह सलाम केहते (हुए अलग हो जाते) हैं।

وَ الَّذِیْنَ یَبِیْتُوْنَ لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا وَّ
قِیَامًا ﴿٦٤﴾

64. और (येह) वोह लोग हैं जो अपने रब के लिए सज्दा रेज़ी और क़ियामे (नियाज़) में रातें बसर करते हैं।

وَ الَّذِیْنَ یَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اصْرِفْ
عَنَّا عَذَابَ جَهَنَّمَ ۖ اِنَّ عَذَابَهَا
كَانَ غَرَامًا ﴿٦٥﴾ۖ

65. और (येह) वोह लोग हैं जो (हमा वक्त ह़ुज़ूरे बारी तआ़ला में) अ़र्ज गुज़ार रेहते हैं कि ए हमारे रब ! तू हमसे दोज़ख़का अ़ज़ाब हटा ले बेशक इसका अ़ज़ाब बड़ा मोहलिक (और दाइमी) है।

اِنَّهَا سَآءَتْ مُسْتَقَرًّا وَّ مُقَامًا ﴿٦٦﴾

66.बेशक वोह (आ़रज़ी ठहरनेवालों के लिए) बुरी क़रारगाह और (दाइमी रेहनेवालों के लिए) बुरी क़यामगाह है।

وَ الَّذِیْنَ اِذَاۤ اَنْفَقُوْا لَمْ یُسْرِفُوْا
وَ لَمْ یَقْتُرُوْا وَ كَانَ بَیْنَ ذٰلِكَ
قَوَامًا ﴿٦٧﴾

67. और (येह) वोह लोग हैं कि जब ख़र्च करते हैं तो न बेजा उड़ाते हैं और न तंगी करते हैं और उनका ख़र्च करना (ज़ियादती और कमी की) उन दो ह़दों के दरमियान ए'तिदाल पर (मब्नी) होता है।

وَالَّذِيْنَ لَا يَدْعُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا
اٰخَرَ وَلَا يَقْتُلُوْنَ النَّفْسَ الَّتِيْ
حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُوْنَ ۚ
وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ يَلْقَ اَثَامًا ﴿٦٨﴾

68. और (येह) वोह लोग हैं जो अल्लाह के साथ किसी दूसरे मा'बूद की पूजा नहीं करते और न (ही) किसी ऐसी जानको क़त्ल करते हैं जिसे बिग़ैर ह़क़ मारना अल्लाहने ह़राम फ़रमाया है और न (ही) बदकारी करते हैं और जो शख़्स येह काम करेगा वोह सज़ाए गुनाह पाएगा।

يُّضٰعَفْ لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ
وَيَخْلُدْ فِيْهٖ مُهَانًا ﴿٦٩﴾

69. उसके लिए क़ियामतके दिन अ़ज़ाब दोगुना कर दिया जाएगा और वोह उसमें ज़िल्लतो ख़्वारी के साथ हमेशा रहेगा।

اِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا
فَاُولٰٓئِكَ يُبَدِّلُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِهِمْ حَسَنٰتٍ ؕ
وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٧٠﴾

70. मगर जिसने तौबा कर ली और ईमान ले आया और नेक अ़मल किया तो येह वोह लोग हैं कि अल्लाह जिनकी बुराइयों को नेकियोंसे बदल देगा, और अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला निहायत महरबान है।

وَمَنْ تَابَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَاِنَّهٗ
يَتُوْبُ اِلَى اللّٰهِ مَتَابًا ﴿٧١﴾

71.और जिसने तौबा कर ली और नेक अ़मल किया तो उसने अल्लाहकी तरफ़ (वोह) रुजूअ़ किया जो रजूअ़ का ह़क़ था।

وَالَّذِيْنَ لَا يَشْهَدُوْنَ الزُّوْرَ ۙ
وَاِذَا مَرُّوْا بِاللَّغْوِ مَرُّوْا كِرَامًا ﴿٧٢﴾

72. और (येह) वोह लोग हैं जो किज़्ब और बातिल कामों में (क़ौलन और अ़मलन दोनों सूरतों में) ह़ाज़िर नहीं होते और जब बेहूदा कामों के पाससे गुज़रते हैं तो (दामन बचाते हुए) निहायत वक़ार और मतानत के साथ गुज़र जाते हैं।

وَالَّذِيْنَ اِذَا ذُكِّرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ
لَمْ يَخِرُّوْا عَلَيْهَا صُمًّا وَّعُمْيَانًا ﴿٧٣﴾

73.और (येह) वोह लोग हैं कि जब उन्हें उनके रबकी आयतों के ज़रीए़ नसीह़त की जाती है तो उन पर बेहरे और अँधे हो कर नहीं गिर पड़ते (बल्कि ग़ौरो फ़िक्र भी करते हैं)।

وَالَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا هَبْ لَنَا
مِنْ اَزْوَاجِنَا وَذُرِّيّٰتِنَا قُرَّةَ اَعْيُنٍ
وَّاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِيْنَ اِمَامًا ﴿٧٤﴾

74. और (येह) वोह लोग हैं जो (हुज़ूरे बारी तआ़ला में) अ़र्ज़ करते हैं : ऐ हमारे रब, हमें हमारी बीवियों और हमारी औलादकी तरफ़से आँखोंकी ठंडक अता फ़रमा, और हमें परहेज़गारोंका पेशवा बना दे।

اُولٰٓئِكَ يُجْزَوْنَ الْغُرْفَةَ بِمَا صَبَرُوْا وَيُلَقَّوْنَ فِيْهَا تَحِيَّةً وَّسَلٰمًا ﴿٧٥﴾

75.उन्ही लोगों को (जन्नत में) बुलंद तरीन महल्लात उनके सब्र करने की जज़ा के तौर पर बख़्शे जाएंगे और वहां दुआए ख़ैर और सलामके साथ उनका इस्तिक़बाल किया जाएगा।

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ حَسُنَتْ مُسْتَقَرًّا وَّمُقَامًا ﴿٧٦﴾

76.येह उसमें हमेशा रेहनेवाले हैं, वोह (बुलंद महल्लाते जन्नत) बेहतरीन क़रारगाह और (उ़मदा) क़ियामगाह हैं।

قُلْ مَا يَعْبَؤُا بِكُمْ رَبِّيْ لَوْلَا دُعَآؤُكُمْ ۚ فَقَدْ كَذَّبْتُمْ فَسَوْفَ يَكُوْنُ لِزَامًا ﴿٧٧﴾

77. फ़रमा दीजिए : मेरे रबको तुम्हारी कोई परवाह नहीं अगर तुम (उसकी) इ़बादत न करो, पस वाक़ई तुमने (उसे) झुटलाया है तो अब येह (झुटलाना तुम्हारे लिए) दाइमी अ़ज़ाब बना रहेगा।

आयातुहा 227	26 सूरतुश शुअ़राइ मक्कियतुन 47	रुकूआ़तुहा 11

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ़ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमानेवाला है।

طٰسٓمّٓ ﴿١﴾

1. तॉ सीम मीम । (ह़क़ीक़ी मा'ना अल्लाह और रसूल ﷺ ही बेहतर जानते हैं)

تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ﴿٢﴾

2. येह (ह़क़को)वाज़ेह़ करनेवाली किताबकी आयतें हैं।

لَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ اَلَّا يَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿٣﴾

3. (ऐ ह़बीबे मुकर्रम !) शायद आप (इस ग़म में) अपनी जाने (अ़ज़ीज़) ही दे बैठेंगे कि वोह ईमान नहीं लाते।

اِنْ نَّشَاْ نُنَزِّلْ عَلَيْهِمْ مِّنَ السَّمَآءِ اٰيَةً فَظَلَّتْ اَعْنَاقُهُمْ لَهَا خٰضِعِيْنَ ﴿٤﴾

4. अगर हम चाहें तो उन पर आस्मान से (ऐसी) निशानी उतार दें कि उनकी गरदनें उसके आगे झुकी रेह जाएं।

وَمَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ ذِكْرٍ مِّنَ الرَّحْمٰنِ مُحْدَثٍ اِلَّا كَانُوْا عَنْهُ مُعْرِضِيْنَ ﴿٥﴾

5.और उनके पास (ख़ुदाए) रह़मान की जानिबसे कोई नई नसीहत नहीं आती मगर वोह उससे रू गरदां हो जाते हैं।

فَقَدْ كَذَّبُوْا فَسَيَاْتِيْهِمْ اَنْۢبٰٓؤُا مَا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٦﴾

6.सो बेशक वोह (ह़क़को) झुटला चुके पस अ़नक़रीब उन्हें इस अम्रकी खबरें पहोंच जाएंगी जिसका वोह मज़ाक़ उडाया करते थे।

أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَى الْأَرْضِ كَمْ أَنْبَتْنَا فِيهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ كَرِيمٍ ٧

7. और क्या उन्होंने ज़मीनकी तरफ़ निगाह नहीं की कि हमने उसमें कितनी ही नफ़ीस चीज़ें उगाई हैं।

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ٨

8. बेशक उसमें ज़रूर (क़ुदरते इलाहिय्याकी) निशानी है, और उनमें से अक्सर लोग ईमान लानेवाले नहीं हैं।

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ٩

9. और यक़ीनन आपका रब ही तो ग़ालिब, महरबान है।

وَإِذْ نَادَىٰ رَبُّكَ مُوسَىٰ أَنِ ائْتِ الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ١٠

10.और (वोह वाक़िआ़ याद कीजिऐ) जब आपके रबने मूसा (عليه السلام) को निदा दी कि तुम ज़ालिमों की क़ौमके पास जाओ।

قَوْمَ فِرْعَوْنَ ۚ أَلَا يَتَّقُونَ ١١

11.(या'नी) क़ौमे फ़िरऔ़न के पास, क्या वोह (अल्लाहसे) नहीं डरते।

قَالَ رَبِّ إِنِّي أَخَافُ أَنْ يُكَذِّبُونِ ١٢

12.मूसा (عليه السلام) ने अ़र्ज़ किया : ऐ रब ! में डरता हूं कि वोह मुझे झुटला देंगे।

وَيَضِيقُ صَدْرِي وَلَا يَنْطَلِقُ لِسَانِي فَأَرْسِلْ إِلَىٰ هَارُونَ ١٣

13.और (ऐसे ना साज़गार माहौल में) मेरा सीना तंग हो जाता है और मेरी ज़बान (रवानी से) नहीं चलती सो हारून (عليه السلام) की तरफ़ (भी जिब्राईल عليه السلام को वही के साथ) भेज दे (ताकि वोह मेरा मुआ़विन बन जाए)।

وَلَهُمْ عَلَيَّ ذَنْبٌ فَأَخَافُ أَنْ يَقْتُلُونِ ١٤

14.और उनका मेरे उपर (क़िब्ती को मार डालने का) एक इल्ज़ाम भी है सो मैं डरता हूं कि वोह मुझे क़त्ल कर डालेंगे।

قَالَ كَلَّا ۖ فَاذْهَبَا بِآيَاتِنَا ۖ إِنَّا مَعَكُمْ مُسْتَمِعُونَ ١٥

15.इर्शाद हुवा हरगिज़ नहीं, पस तुम दोनों हमारी निशानियां ले कर जाओ बेशक हम तुम्हारे साथ (हर बात) सुननेवाले हैं।

فَأْتِيَا فِرْعَوْنَ فَقُولَا إِنَّا رَسُولُ رَبِّ الْعَالَمِينَ ١٦

16.पस तुम दोनों फ़िरऔ़न के पास जाओ और कहो : हम सारे जहानों के परवरदिगार के (भेजे हुए) रसूल हैं।

أَنْ أَرْسِلْ مَعَنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ ١٧

17.(हमारा मुद्दआ़ येह है) कि तू बनी इसराईल को (आज़ादी दे कर) हमारे साथ भेज दे।

قَالَ اَلَمْ نُرَبِّكَ فِيْنَا وَلِيْدًا وَّ
لَبِثْتَ فِيْنَا مِنْ عُمُرِكَ سِنِيْنَ ۙ﴿١٨﴾

18.(फ़िरऔ़नने) कहा : क्या हमने तुम्हें अपने यहां बचपनकी ह़ालत में पाला नहीं था और तुमने अपनी उ़म्र के कितने ही साल हमारे अंदर बसर किए थे।

وَ فَعَلْتَ فَعْلَتَكَ الَّتِيْ فَعَلْتَ
وَ اَنْتَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿١٩﴾

19.और (फिर) तुमने अपना वोह काम कर डाला जो तुम ने किया था (या'नी एक क़िब्ती को क़त्ल कर दिया) और तुम नाशुक्र गुज़ारों में से हो (हमारी परवरिश और एह़सानात को भूल गए हो)।

قَالَ فَعَلْتُهَاۤ اِذًا وَّ اَنَا مِنَ
الضَّآلِّيْنَ ؕ﴿٢٠﴾

20.(मूसा عليه السلام ने) फ़रमाया : जब मैंने वोह काम किया मैं बे ख़बर था (कि क्या एक घूंसे से उसकी मौत भी वाक़ेअ़ हो सक्ती है?)।

فَفَرَرْتُ مِنْكُمْ لَمَّا خِفْتُكُمْ فَوَهَبَ
لِيْ رَبِّيْ حُكْمًا وَّ جَعَلَنِيْ مِنَ
الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٢١﴾

21.फिर मैं (उस वक़्त) तुम्हारे (दाइरए इख़्तियार) से निकल गया जब मैं तुम्हारे (इरादों) से ख़ौफ़ज़दा हुवा फिर मेरे रबने मुझे हुक्मे (नुबुव्वत) बख़्शा और (बिल आख़िर) मुझे रसूलों में शामिल फ़रमा दिया।

وَ تِلْكَ نِعْمَةٌ تَمُنُّهَا عَلَيَّ اَنْ
عَبَّدْتَّ بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ ؕ﴿٢٢﴾

22.और क्या वोह (कोई) भलाई है जिसका तू मुझ पर एहसान जता रहा है (उसका सबब भी येह था) कि तूने (मेरी पूरी क़ौम) बनी इसराईल को गु़लाम बना रखा था।

قَالَ فِرْعَوْنُ وَمَا رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ؕ﴿٢٣﴾

23. फ़िरऔ़नने कहा : सारे जहानोंका परवरदिगार क्या चीज़ है?

قَالَ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا
بَيْنَهُمَا ؕ اِنْ كُنْتُمْ مُّوْقِنِيْنَ ﴿٢٤﴾

24.(मूसा عليه السلام ने) फ़रमाया : (वोह) जुम्ला आस्मानों का और ज़मीन का और उस (सारी काइनात) का रब है जो उन दोनों के दरमियान है, अगर तुम यक़ीन करनेवाले हो।

قَالَ لِمَنْ حَوْلَهٗۤ اَلَا تَسْتَمِعُوْنَ ﴿٢٥﴾

25.उसने उन (लोगों) से कहा जो उसके गिर्द (बैठे) थे : क्या तुम सुन नहीं रहे हो?

قَالَ رَبُّكُمْ وَ رَبُّ اٰبَآئِكُمُ
الْاَوَّلِيْنَ ﴿٢٦﴾

26. (मूसा عليه السلام ने मज़ीद) कहा कि (वोही) तुम्हारा (भी) रब है और तुम्हारे अगले बापदादों का (भी) रब है।

قَالَ اِنَّ رَسُوْلَكُمُ الَّذِيْۤ اُرْسِلَ

27.(फ़िरऔ़नने) कहा : बेशक तुम्हारा रसूल जो तुम्हारी

اِلَيْكُمْ لَمَجْنُوْنٌ ﴿٢٧﴾

तरफ़ भेजा गया है ज़रूर दीवाना है।

قَالَ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَمَا بَيْنَهُمَا ؕ اِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿٢٨﴾

28. (मूसा ﷺ ने) कहा : (वोह) मशरिक़ और मग़रिब और उस (सारी काइनात) का रब है जो उन दोनों के दरमियान है अगर तुम (कुछ) अ़क़्ल रखते हो।

قَالَ لَئِنِ اتَّخَذْتَ اِلٰهًا غَيْرِيْ لَاَجْعَلَنَّكَ مِنَ الْمَسْجُوْنِيْنَ ﴿٢٩﴾

29. (फ़िरऔ़नने) कहा : (ऐ मूसा !) अगर तुमने मेरे सिवा किसी और को मा'बूद बनाया तो मैं तुमको ज़रूर (गिरफ़्तार कर के) क़ैदियों में शामिल कर दूंगा।

قَالَ اَوَلَوْ جِئْتُكَ بِشَيْءٍ مُّبِيْنٍ ﴿٣٠﴾ ج

30. (मूसा ﷺ ने) फ़रमाया : अगरचे मैं तेरे पास कोई वाज़ेह़ चीज़ (बतौरे मो'जिज़ा भी) ले आऊं।

قَالَ فَاْتِ بِهٖۤ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿٣١﴾

31. (फ़िरऔ़नने) कहा : तुम उसे ले आओ अगर तुम सच्चे हो।

فَاَلْقٰى عَصَاهُ فَاِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُّبِيْنٌ ﴿٣٢﴾ ج

32. पस (मूसा ﷺ ने) अपना अ़सा (ज़मीन पर) डाल दिया वोह उसी वक़्त वाज़ेह़ (तौर पर) अज़दहा बन गया।

وَّنَزَعَ يَدَهٗ فَاِذَا هِيَ بَيْضَآءُ لِلنّٰظِرِيْنَ ﴿٣٣﴾ ع ٢ ع ٢٤ ٦

33. और (मूसा ﷺ ने) अपना हाथ (बग़ल में डाल कर) बाहर निकाला तो वोह उसी वक़्त देखनेवालों के लिए सफ़ेद चमकदार हो गया।

قَالَ لِلْمَلَاِ حَوْلَهٗۤ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ عَلِيْمٌ ﴿٣٤﴾ لا

34. (फ़िरऔ़नने) अपने इर्द गिर्द (बैठे हूए) सरदारों से कहा : बिला शुब्हा येह बड़ा दाना जादूगर है।

يُّرِيْدُ اَنْ يُّخْرِجَكُمْ مِّنْ اَرْضِكُمْ بِسِحْرِهٖ ۖ فَمَاذَا تَاْمُرُوْنَ ﴿٣٥﴾

35. येह चाहता है कि तुम्हें अपने जादू (के ज़ोर) से तुम्हारे मुल्क से बाहर निकाल दे पस तुम (अब इसके बारे में) क्या राए देते हो।

قَالُوْۤا اَرْجِهْ وَاَخَاهُ وَابْعَثْ فِي الْمَدَآئِنِ حٰشِرِيْنَ ﴿٣٦﴾ لا

36. वोह बोले कि तू उसे और उसके भाई (हारून के हुक्मे सज़ा सुनाने) को मोअख़्ख़र कर दे और (तमाम) शहरों में (जादूगरों को बुलाने के लिए) हरकारे भेज दे।

يَأْتُوكَ بِكُلِّ سَحَّارٍ عَلِيمٍ ﴿٣٧﴾

37.वोह तेरे पास हर बड़े माहिरे फ़न जादूगर को ले आएं।

فَجُمِعَ السَّحَرَةُ لِمِيقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُومٍ ﴿٣٨﴾ لا

38. पस सारे जादूगर मुक़र्ररह दिनके मुअ़य्यना वक़्त पर जमा' कर लिए गए।

وَّقِيلَ لِلنَّاسِ هَلْ أَنْتُمْ مُّجْتَمِعُونَ ﴿٣٩﴾ لا

39. और (फ़िरऔ़न की तरफ़से) लोगों को कहा गया कि तुम (इस मौक़े' पर) जमा' होनेवाले हो।

لَعَلَّنَا نَتَّبِعُ السَّحَرَةَ إِنْ كَانُوا هُمُ الْغَالِبِينَ ﴿٤٠﴾

40. ताकि हम जादूगरों (के दीन) की पैरवी कर सकें अगर वोह (मूसा और हारून पर) ग़ालिब आ गए।

فَلَمَّا جَاءَ السَّحَرَةُ قَالُوا لِفِرْعَوْنَ أَئِنَّ لَنَا لَأَجْرًا إِنْ كُنَّا نَحْنُ الْغَالِبِينَ ﴿٤١﴾

41. फिर जब वोह जादूगर आ गए (तो) उन्होंने फ़िरऔ़न से कहा : क्या हमारे लिए कोई उजरत (भी मुक़र्रर) है अगर हम (मुक़ाबले में) ग़ालिब हो जाएं।

قَالَ نَعَمْ وَ إِنَّكُمْ إِذًا لَّمِنَ الْمُقَرَّبِينَ ﴿٤٢﴾

42. (फ़िरऔ़नने) कहा : हां बेशक तुम उसी वक़्त (उजरतवालोंकी बजाए मेरी) क़ुर्बत वालों में शामिल हो जाओगे (और क़ुर्बत का दर्जा उजरतसे कहीं बुलंद है)।

قَالَ لَهُمْ مُّوسَى أَلْقُوا مَا أَنْتُمْ مُّلْقُونَ ﴿٤٣﴾

43. मूसा (عليه السلام) ने उन (जादूगरों से) फ़रमाया : तुम वोह (जादूकी) चीज़ें डाल दो जो तुम डालनेवाले हो।

فَأَلْقَوْا حِبَالَهُمْ وَعِصِيَّهُمْ وَقَالُوا بِعِزَّةِ فِرْعَوْنَ إِنَّا لَنَحْنُ الْغَالِبُونَ ﴿٤٤﴾

44. तो उन्होंने अपनी रस्सियां और अपनी लाठियां डाल दीं और केहने लगे : फ़िरऔ़नकी इज़्ज़तकी क़सम हम ज़रूर ग़ालिब होंगे।

فَأَلْقَى مُوسَى عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا يَأْفِكُونَ ﴿٤٥﴾ ج

45. फिर मूसा (عليه السلام) ने अपना डंडा डाल दिया तो वोह (अज़दहा बन कर) फ़ौरन उन चीज़ोंको निगलने लगा जो उन्हों ने फ़रेबकारी से (अपनी अस्ल हक़ीक़त से) फेर रखी थीं।

فَأُلْقِيَ السَّحَرَةُ سُجِدِينَ ﴿٤٦﴾ لا

46. पस सारे जादूगर सज्दा करते हुए गिर पड़े।

قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ﴿۴۷﴾

47. वोह केहने लगे : हम सारे जहानों के परवरदिगार पर ईमान ले आए।

رَبِّ مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ﴿۴۸﴾

48. (जो) मूसा और हारून (عليه السلام) का रब है।

قَالَ اٰمَنْتُمْ لَهٗ قَبْلَ اَنْ اٰذَنَ لَكُمْ ۚ
اِنَّهٗ لَكَبِيْرُكُمُ الَّذِيْ عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ ۚ
فَلَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ؕ لَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ
وَاَرْجُلَكُمْ مِّنْ خِلَافٍ وَّلَاُصَلِّبَنَّكُمْ
اَجْمَعِيْنَ ۚ﴿۴۹﴾

49. (फ़िरऔ़नने) कहा : तुम उस पर ईमान ले आए हो क़ब्ल उसके कि मैं तुम्हें इजाज़त देता, बेशक येह (मूसा عليه السلام) ही तुम्हारा बड़ा (उस्ताद) है जिसने तुम्हें जादू सिखाया है, तुम जल्द ही (अपना अंजाम) मा'लूम कर लोगे मैं ज़रूर ही तुम्हारे हाथ और तुम्हारे पांव उलटी तरफ़ से काट डालूंगा और तुम सबको यक़ीनन सूली पर चढ़ा दूंगा।

قَالُوْا لَا ضَيْرَ ۫ اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا
مُنْقَلِبُوْنَ ۚ﴿۵۰﴾

50. उन्होंने कहा : (उसमें) कोई नुक़्सान नहीं, बेशक हम अपने रबकी तरफ़ पलटनेवाले हैं।

اِنَّا نَطْمَعُ اَنْ يَّغْفِرَ لَنَا رَبُّنَا خَطٰيٰنَآ
اَنْ كُنَّآ اَوَّلَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۵۱﴾ ع ۱۸ / ۳ / ۷

51. हम क़वी उम्मीद रखते हैं कि हमारा रब हमारी खताऐं मुआफ़ फ़रमा देगा, उस वजह से कि (अब) हम ही सबसे पहले ईमान लानेवाले हैं।

وَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى اَنْ اَسْرِ
بِعِبَادِيْٓ اِنَّكُمْ مُّتَّبَعُوْنَ ﴿۵۲﴾

52. और हमने मूसा (عليه السلام) की तरफ़ वही भेजी कि तुम मेरे बंदों को रातों रात (यहां से) ले जाओ बेशक तुम्हारा तआ़क़ुब किया जाएगा।

فَاَرْسَلَ فِرْعَوْنُ فِى الْمَدَآئِنِ حٰشِرِيْنَ ۚ﴿۵۳﴾

53. फ़िर फ़िरओ़नने शहरों में हरकारे भेज दिऐ।

اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ لَشِرْذِمَةٌ قَلِيْلُوْنَ ۙ﴿۵۴﴾

54. (और कहा) बेशक येह (बनी इसराईल) थोड़ी सी जमाअ़त है।

وَاِنَّهُمْ لَنَا لَغَآئِظُوْنَ ۙ﴿۵۵﴾

55. और बिला शुबा वोह हमें गुस्सा दिला रहे हैं।

وَاِنَّا لَجَمِيْعٌ حٰذِرُوْنَ ؕ﴿۵۶﴾

56. और यक़ीनन हम सब (भी) मुस्तइद और चौकस हैं।

فَاَخْرَجْنٰهُمْ مِّنْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ۙ﴿۵۷﴾

57. पस हमने उन (फ़िरऔ़नियों) को बाग़ों और चश्मों से निकाल बाहर किया।

وَّكُنُوْزٍ وَّمَقَامٍ كَرِيْمٍ ﴿٥٨﴾

58. और ख़ज़ानों और नफ़ीस क़ियामगाहों से (भी निकाल दिया)।

كَذٰلِكَ ؕ وَاَوْرَثْنٰهَا بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ ﴿٥٩﴾

59. (हमने) उसी तरह (किया) और हमने बनी इसराईल को उन (सब चीज़ों) का वारिस बना दिया।

فَاَتْبَعُوْهُمْ مُّشْرِقِيْنَ ﴿٦٠﴾

60. फिर सूरज निकलते वक़्त उन (फ़िरऔनियों) ने उनका तआ़क़ुब किया।

فَلَمَّا تَرَآءَ الْجَمْعٰنِ قَالَ اَصْحٰبُ مُوْسٰۤى اِنَّا لَمُدْرَكُوْنَ ﴿٦١﴾

61. फिर जब दोनों जमाअ़तें आमने सामने हूईं (तो) मूसा (عليه السلام) के साथियोंने कहा : (अब) हम ज़रूर पकड़े गए।

قَالَ كَلَّا ۚ اِنَّ مَعِيَ رَبِّيْ سَيَهْدِيْنِ ﴿٦٢﴾

62. (मूसा عليه السلام ने) फ़रमाया : हरगिज़ नहीं बेशक मेरे साथ मेरा रब है वोह अभी मुझे राहे (नजात) दिखा देगा।

فَاَوْحَيْنَاۤ اِلٰى مُوْسٰۤى اَنِ اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْبَحْرَ ؕ فَانْفَلَقَ فَكَانَ كُلُّ فِرْقٍ كَالطَّوْدِ الْعَظِيْمِ ﴿٦٣﴾

63. फिर हमने मूसा (عليه السلام) की तरफ़ वही भेजी कि अपना अ़सा दरिया पर मारो, पस दरिया (बारह हिस्सों में) फट गया और हर टुकड़ा ज़बरदस्त पहाड़की मानिन्द हो गया।

وَاَزْلَفْنَا ثَمَّ الْاٰخَرِيْنَ ﴿٦٤﴾

64. और हमने दूसरों (या'नी फ़िरऔन और उसके साथियों) को उस जगह के क़रीब कर दिया।

وَاَنْجَيْنَا مُوْسٰى وَمَنْ مَّعَهٗۤ اَجْمَعِيْنَ ﴿٦٥﴾

65. और हमने मूसा عليه السلام को (भी) नजात बख़्शी और उन सब लोगों को (भी) जो उनके साथ थे।

ثُمَّ اَغْرَقْنَا الْاٰخَرِيْنَ ﴿٦٦﴾

66. फिर हमने दूसरों (या'नी फ़िरऔनियों) को ग़र्क़ कर दिया।

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٦٧﴾

67. बेशक इस (वाक़िए) में (क़ुदरते इलाहिया) की बड़ी निशानी है, और उनमें से अक्सर लोग मोमिन न थे।

وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿٦٨﴾ ع ٤ ١٧ ٨

68. और बेशक आपका रब ही यक़ीनन ग़ालिब रहमत वाला है।

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ اِبْرٰهِيْمَ ﴿٦٩﴾ وقف لازم

69. और आप उन पर इब्राहीम (عليه السلام) का क़िस्सा (भी) पढ़ कर सुना दें।

اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖ مَا تَعْبُدُوْنَ ﴿٧٠﴾

70. जब उन्होंने अपने बाप ★और अपनी क़ौमसे फ़रमाया : तुम किस चीज़को पूजते हो।

قَالُوْا نَعْبُدُ اَصْنَامًا فَنَظَلُّ لَهَا عٰكِفِيْنَ ﴿٧١﴾

71. उन्होंने कहा : हम बुतोंकी परस्तिश करते हैं और हम उन्ही (की इबादतो ख़िदमत) के लिए जमे रेहनेवाले हैं।

قَالَ هَلْ يَسْمَعُوْنَكُمْ اِذْ تَدْعُوْنَ ﴿٧٢﴾ لا

72. (इब्राहीम عليه السلام ने) फ़रमाया : क्या वोह तुम्हें सुनते हैं जब तुम (उनको) पुकारते हो?

اَوْ يَنْفَعُوْنَكُمْ اَوْ يَضُرُّوْنَ ﴿٧٣﴾

73.या वोह तुम्हें नफ़ा' पहुंचाते हैं या नुक़्सान पहुंचाते हैं?

قَالُوْا بَلْ وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا كَذٰلِكَ يَفْعَلُوْنَ ﴿٧٤﴾

74. वोह बोले (येह तो मा'लूम नहीं) लेकिन हमने अपने बापदादा को ऐसा ही करते पाया था।

قَالَ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا كُنْتُمْ تَعْبُدُوْنَ ﴿٧٥﴾ لا

75. (इब्राहीम عليه السلام ने) फ़रमाया : क्या तुमने (कभी उनकी ह़क़ीक़त में) ग़ौर किया है जिनकी तुम परस्तिश करते हो।

اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمُ الْاَقْدَمُوْنَ ﴿٧٦﴾ ۖ

76. तुम और तुम्हारे अगले आबाओ अजदाद (अल ग़रज़ किसीने भी सोचा)?

فَاِنَّهُمْ عَدُوٌّ لِّيْٓ اِلَّا رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٧٧﴾ لا

77. पस वोह (सब बुत) मेरे दुश्मन हैं सिवाए तमाम जहानोंके रबके (वोही मेरा मा'बूद है)।

الَّذِيْ خَلَقَنِيْ فَهُوَ يَهْدِيْنِ ﴿٧٨﴾ لا

78. वोह जिसने मुझे पैदा किया सो वोही मुझे हिदायत फ़रमाता है।

وَالَّذِيْ هُوَ يُطْعِمُنِيْ وَيَسْقِيْنِ ﴿٧٩﴾ لا

79. और वोही है जो मुझे खिलाता और पिलाता है।

وَاِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِيْنِ ﴿٨٠﴾ ۙ

80. और जब मैं बीमार हो जाता हूं तो वोही मुझे शिफ़ा देता है।

وَالَّذِيْ يُمِيْتُنِيْ ثُمَّ يُحْيِيْنِ ﴿٨١﴾ لا

81. और वोही मुझे मौत देगा फिर वोही मुझे (दोबारा) ज़िन्दा फ़रमाएगा।

وَالَّذِيْٓ اَطْمَعُ اَنْ يَّغْفِرَ لِيْ خَطِيْٓـَٔتِيْ

82. और उसीसे में उम्मीद रखता हूं के रोज़े क़ियामत

★(येह ह़क़ीक़ी बाप न था। चचा था उसीने ह़ज़रत इब्राहीम عليه السلام की परवरिश की थी जिसकी वजहसे उसे बाप कहा करते थे। उसका नाम आज़र है जबकि आपके ह़क़ीक़ी वालिदका नाम तारिख़ है)।

يَوْمَ الدِّيْنِ ﴿٨٢﴾

वोह मेरी ख़ताएं मुआ़फ़ फ़रमा देगा।

رَبِّ هَبْ لِيْ حُكْمًا وَّ اَلْحِقْنِيْ بِالصّٰلِحِيْنَ ﴿٨٣﴾

83. ऐ मेरे रब मुझे इ़ल्मो अ़मल में कमाल अ़ता फ़रमा और मुझे अपने कुर्बे ख़ास के सज़ावारों में शामिल फ़रमा ले।

وَاجْعَلْ لِّيْ لِسَانَ صِدْقٍ فِي الْاٰخِرِيْنَ ﴿٨٤﴾

84. और मेरे लिए बाद में आनेवालों में (भी) ज़िक्रे ख़ैर और क़ुबूलियत जारी फ़रमा।

وَاجْعَلْنِيْ مِنْ وَّرَثَةِ جَنَّةِ النَّعِيْمِ ﴿٨٥﴾

85.और मुझे ने'मतोंवाली जन्नत के वारिसों में से बना दे।

وَاغْفِرْ لِاَبِيْٓ اِنَّهٗ كَانَ مِنَ الضَّآلِّيْنَ ﴿٨٦﴾

86. और मेरे बापको बख़्श दे बेशक वोह गुमराहों में से था।

وَلَا تُخْزِنِيْ يَوْمَ يُبْعَثُوْنَ ﴿٨٧﴾

87. और मुझे (उस दिन) रुस्वा न करना जिस दिन लोग क़ब्रों से उठाए जाएंगे।

يَوْمَ لَا يَنْفَعُ مَالٌ وَّلَا بَنُوْنَ ﴿٨٨﴾

88. जिस दिन न कोई माल नफ़ा' देगा और न औलाद।

اِلَّا مَنْ اَتَى اللّٰهَ بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ ﴿٨٩﴾

89. मगर वोही शख़्स (नफ़ा' मंद होगा) जो अल्लाह की बारगाह में सलामतीवाले बेऐ़ब दिलके साथ हाज़िर हुवा।

وَاُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿٩٠﴾

90. और (उस दिन) जन्नत परहेज़गारों के क़रीब कर दी जाएगी।

وَبُرِّزَتِ الْجَحِيْمُ لِلْغٰوِيْنَ ﴿٩١﴾

91.और दोज़ख़ गुमराहों के सामने ज़ाहिर कर दी जाएगी।

وَقِيْلَ لَهُمْ اَيْنَمَا كُنْتُمْ تَعْبُدُوْنَ ﴿٩٢﴾

92. और उनसे कहा जाएगा वोह (बुत) कहां हैं जिन्हें तुम पूजते थे।

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۭ هَلْ يَنْصُرُوْنَكُمْ اَوْ يَنْتَصِرُوْنَ ﴿٩٣﴾

93. अल्लाह के सिवा, क्या वोह तुम्हारी मदद कर सक्ते हैं या खुद अपनी मदद कर सक्ते हैं ? (कि अपने आपको दोज़ख़से बचा लें)।

فَكُبْكِبُوْا فِيْهَا هُمْ وَالْغَاوٗنَ ﴿٩٤﴾

94. सो वोह (बुत भी) उस (दोज़ख़) में औंधे मुंह गिरा दिए जाएंगे और गुमराह लोग (भी)।

وَجُنُوْدُ اِبْلِيْسَ اَجْمَعُوْنَ ﴿٩٥﴾

95. और इब्लीस की सारी फ़ौजें (भी वासिले जहन्नम होंगी)।

قَالُوْا وَهُمْ فِيْهَا يَخْتَصِمُوْنَ ﴿٩٦﴾

96. वोह (गुमराह लोग) उस (दोज़ख़) में बाहम झगड़ा करते हुए कहेंगे।

تَاللّٰهِ اِنْ كُنَّا لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ﴿٩٧﴾

97. अल्लाहकी क़सम हम खुली गुमराही में थे।

اِذْ نُسَوِّيْكُمْ بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٩٨﴾

98. जब हम तुम्हें सब जहानों के रब के बराबर ठेहराते थे।

وَمَآ اَضَلَّنَآ اِلَّا الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٩٩﴾

99. और हमको (उन) मुजरिमों के सिवा किसीने गुमराह नहीं किया।

فَمَا لَنَا مِنْ شَافِعِيْنَ ﴿١٠٠﴾

100. सो (आज) न कोई हमारी सिफ़ारिश करनेवाला है।

وَلَا صَدِيْقٍ حَمِيْمٍ ﴿١٠١﴾

101. और न कोई गरम जोश दोस्त है।

فَلَوْ اَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٠٢﴾

102. सो काश हमें एक बार (दुनिया में) पलटना (नसीब) हो जाता तो हम मोमिन हो जाते।

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٠٣﴾

103. बेशक इस (वाक़िए) में (क़ुदरते इलाहिया की) बड़ी निशानी है, और उनके अक्सर लोग मोमिन न थे।

وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿١٠٤﴾ ع ٥ ٣٦ ٩

104. और बेशक आपका रब ही यक़ीनन ग़ालिब रहमत वाला है।

كَذَّبَتْ قَوْمُ نُوْحِ ِۨالْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٠٥﴾ ج

105. नूह (عليه السلام) की क़ौमने (भी) पयग़म्बरों को झुटलाया।

اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ نُوْحٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿١٠٦﴾ ج

106. जब उनसे उनके (क़ौमी) भाई नूह (عليه السلام) ने फ़रमाया : क्या तुम (अल्लाहसे) डरते नहीं हो ?

اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ﴿١٠٧﴾

107. बेशक मैं तुम्हारे लिए अमानतदार रसूल (बन कर आया) हूं।

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿١٠٨﴾ ج

108. सो तुम अल्लाहसे डरो और मेरी इताअ़त करो।

وَمَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠٩﴾ ج

109. और मैं तुमसे इस (तबलीग़े हक़) पर कोई मुआ़वज़ा नहीं मांगता, मेरा अज्र तो सिर्फ़ सब जहानोंके रब के ज़िम्मे है।

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿١١٠﴾

110.पस तुम अल्लाहसे डरो और मेरी फ़रमां बरदारी करो।

قَالُوْٓا اَنُؤْمِنُ لَكَ وَاتَّبَعَكَ الْاَرْذَلُوْنَ ﴿١١١﴾

111. वोह बोले : क्या हम तुम पर ईमान ले आए हालांकि तुम्हारी पैरवी (मुआ़शरे के) इन्तिहाई निचले और हक़ीर (तब्क़ात के) लोग कर रहे हैं।

قَالَ وَمَا عِلْمِيْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١١٢﴾

112. (नूह़ عليه السلام ने) फ़रमाया : मेरे इ़ल्म को उनके (पेशावराना) कामों से क्या सरोकार ?

اِنْ حِسَابُهُمْ اِلَّا عَلٰى رَبِّيْ لَوْ تَشْعُرُوْنَ ﴿١١٣﴾

113. उनका हि़साब तो सिर्फ़ मेरे रब ही के ज़िम्मे है। काश तुम समझते (कि हक़ीक़ी इ़ज़्ज़तो ज़िल्लत क्या है)।

وَمَآ اَنَا بِطَارِدِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١١٤﴾

114. और मैं मोमिनों को घुतकारने वाला नहीं हूं।

اِنْ اَنَا اِلَّا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿١١٥﴾

115. में तो फ़क़त खुला डर सुनानेवाला हूं।

قَالُوْا لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهِ يٰنُوْحُ لَتَكُوْنَنَّ مِنَ الْمَرْجُوْمِيْنَ ﴿١١٦﴾

116. वोह बोले : ऐ नूह़ ! अगर तुम (इन बातोंसे) बाज़ न आए तो तुम्हें यक़ीनन संगसार कर दिया जाएगा।

قَالَ رَبِّ اِنَّ قَوْمِيْ كَذَّبُوْنِ ﴿١١٧﴾

117. (नूह़ عليه السلام ने) अर्ज़ किया : ए मेरे रब ! मेरी क़ौमने मुझे झुटला दिया।

فَافْتَحْ بَيْنِيْ وَبَيْنَهُمْ فَتْحًا وَّنَجِّنِيْ وَمَنْ مَّعِيَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١١٨﴾

118. पस तू मेरे और उनके दरमियान फ़ैसला फ़रमा दे और मुझे और उन मोमिनों को जो मेरे साथ हैं नजात दे दे।

فَاَنْجَيْنٰهُ وَمَنْ مَّعَهٗ فِي الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ﴿١١٩﴾

119. पस हमने उनको और जो उनके साथ भरी हुई कश्ती में (सवार) थे नजात दे दी।

ثُمَّ اَغْرَقْنَا بَعْدُ الْبٰقِيْنَ ﴿١٢٠﴾

120. फिर उसके बाद हमने बाक़ी मान्दा लोगों को ग़र्क़ कर दिया।

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٢١﴾

121. बेशक इस (वाक़िए) में (कुदरते इलाहिया की) बड़ी निशानी है, और उनके अक्सर लोग मोमिन न थे।

وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿١٢٢﴾ ع ١٨ ٦ ١٠

122. और बेशक आपका रब ही यक़ीनन ग़ालिब रह़मत वाला है।

النصف

كَذَّبَتْ عَادُ ِۨالْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٢٣﴾

123. (कौमे) आ़दने (भी) पैग़म्बरो को झुटलाया।

اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ هُوْدٌ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿١٢٤﴾

124. जब उसे उनके (क़ौमी) भाई हूद (عليه السلام) ने फ़रमाया : क्या तुम (अल्लाहसे) डरते नहीं हो ?

اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ﴿١٢٥﴾

125. बेशक मैं तुम्हारे लिए अमानतदार रसूल (बन कर आया) हूं।

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿١٢٦﴾

126. सो तुम अल्लाह से डरो और मेरी इताअ़त करो।

وَمَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٢٧﴾

127. और मैं तुमसे इस (तबलीग़े हक) पर कोई मुआ़वज़ा नहीं मांगता, मेरा अज्र तो फ़क़त तमाम जहानों के रबके ज़िम्मे है।

اَتَبْنُوْنَ بِكُلِّ رِيْعٍ اٰيَةً تَعْبَثُوْنَ ﴿١٢٨﴾

128. क्या तुम हर ऊंची जगह पर एक यादगार ता'मीर करते हो (महज़) तफ़ाख़ुर और फ़ुज़ूल मश्ग़लों के लिए।

وَتَتَّخِذُوْنَ مَصَانِعَ لَعَلَّكُمْ تَخْلُدُوْنَ ﴿١٢٩﴾

129. और तुम (तालाबोंवाले) मज़बूत महल्लात बनाते हो इस उम्मीद पर कि तुम (दुनिया में) हमेशा रहोगे।

وَاِذَا بَطَشْتُمْ بَطَشْتُمْ جَبَّارِيْنَ ﴿١٣٠﴾

130. और जब तुम किसी की गिरफ़्त करते हो तो सख़्त ज़ालिमो जाबिर बन कर गिरफ़्त करते हो।

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿١٣١﴾

131. सो तुम अल्लाह से डरो और मेरी फ़रमां बरदारी इख़्तियार करो।

وَاتَّقُوا الَّذِيْٓ اَمَدَّكُمْ بِمَا تَعْلَمُوْنَ ﴿١٣٢﴾

132. और उस (अल्लाह) से डरो जिसने तुम्हारी उन चीज़ों से मदद की जो तुम जानते हो।

اَمَدَّكُمْ بِاَنْعَامٍ وَّبَنِيْنَ ﴿١٣٣﴾

133. उसने तुम्हारी चैपाया जानवरों और औलाद से मदद फ़रमाई।

وَجَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ﴿١٣٤﴾

134. और बाग़ात और चश्मों से (भी)।

اِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿١٣٥﴾

135. बेशक मैं तुम पर एक ज़बरदस्त दिनके अ़ज़ाबका ख़ौफ़ रखता हूं।

قَالُوْا سَوَآءٌ عَلَيْنَآ اَوَعَظْتَ اَمْ لَمْ

136. वोह बोले : हमारे हक़ में बराबर है ख़्वाह तुम

تَكُنْ مِّنَ الْوٰعِظِيْنَ ﴿۱۳۶﴾

नसीहत करो या नसीहत करनेवालों में न बनो (हम नहीं मानेंगे)।

اِنْ هٰذَآ اِلَّا خُلُقُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿۱۳۷﴾

137. येह (और) कुछ नहीं मगर सिर्फ़ पहले लोगों की आ़दात (व अतवार) हैं (जिन्हें हम छोड़ नहीं सक्ते)।

وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِيْنَ ﴿۱۳۸﴾

138. और हम पर अ़ज़ाब नहीं किया जाएगा।

فَكَذَّبُوْهُ فَاَهْلَكْنٰهُمْ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ
لَاٰيَةً ۭ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ
مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۱۳۹﴾

139. सो उन्होंने उसको (या'नी हूद عليه السلام को) झुटला दिया पस हमने उन्हें हलाक कर डाला, बेशक इस (क़िस्से) में (क़ुदरते इलाहिया की) बड़ी निशानी है, और उनमें से अक्सर लोग मोमिन न थे।

ع ۱۸ ۱۱

وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿۱۴۰﴾

140. और बेशक आपका रब ही यक़ीनन गालिब रह़मत वाला है।

كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿۱۴۱﴾

141. (क़ौमे) समूद ने (भी) पयग़म्बरों को झुटलाया।

اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ صٰلِحٌ اَلَا
تَتَّقُوْنَ ﴿۱۴۲﴾

142. जब उनसे उनके (क़ौमी) भाई सालेह़ (عليه السلام) ने फ़रमाया : क्या तुम (अल्लाह से) डरते नहीं हो ?

اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ﴿۱۴۳﴾

143. बेशक मैं तुम्हारे लिए अमानतदार रसूल (बन कर आया) हूं।

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿۱۴۴﴾

144. पस तुम अल्लाह से डरो और मेरी इताअ़त करो।

وَمَآ اَسْـَٔـلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ
اَجْرِيَ اِلَّا عَلٰي رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۴۵﴾

145. और मैं तुमसे इस (तबलीग़े ह़क़) पर कुछ मुआ़वज़ा तलब नहीं करता, मेरा अज्र तो सिर्फ़ सारे जहानों के परवरदिगार के ज़िम्मे है।

اَتُتْرَكُوْنَ فِيْ مَا هٰهُنَآ اٰمِنِيْنَ ﴿۱۴۶﴾

146. क्या तुम उन (ने'मतों) में जो यहां (तुम्हें मुयस्सर) हैं (हमेशा के लिए) अम्नो इत्मीनान से छोड़ दिए जाओगे ?

فِيْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ﴿۱۴۷﴾

147. (या'नी यहां के) बाग़ों और चश्मों में।

وَّزُرُوْعٍ وَّنَخْلٍ طَلْعُهَا هَضِيْمٌ ﴿۱۴۸﴾

148. और खेतों और खजूरों में जिनके खूशे नर्मो नाज़ुक होते हैं।

وَتَنْحِتُوْنَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا فٰرِهِيْنَ ﴿۱۴۹﴾

149. और तुम (संग तराशी की) महारत के साथ पहाड़ों में तराश (तराश) कर मकानात बनाते हो।

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿۱۵۰﴾

150. पस तुम अल्लाह से डरो और मेरी इताअ़त करो।

وَلَا تُطِيْعُوْٓا اَمْرَ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿۱۵۱﴾

151.और ह़दसे तजावुज़ करनेवालों का केहना न मानो।

الَّذِيْنَ يُفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ وَلَا يُصْلِحُوْنَ ﴿۱۵۲﴾

152. जो ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं और (मुआ़शरे की) इस्लाह़ नहीं करते।

قَالُوْٓا اِنَّمَآ اَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِيْنَ ﴿۱۵۳﴾

153. वोह बोले कि तुम फ़क़त जादूज़दह लोगों में से हो।

مَآ اَنْتَ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا فَاْتِ بِاٰيَةٍ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿۱۵۴﴾

154. तुम तो मह़ज़ हमारे जैसे बशर हो पस तुम कोई निशानी ले आओ अगर तुम सच्चे हो।

قَالَ هٰذِهٖ نَاقَةٌ لَّهَا شِرْبٌ وَّلَكُمْ شِرْبُ يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿۱۵۵﴾

155. (सालेह़ ﷺ ने) फ़रमाया : (वोह निशानी) येह ऊंटनी है पानी का एक वक़्त उसके लिए (मुक़र्रर) है और एक मुक़र्ररा दिन तुम्हारे पानी की बारी है।

وَلَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابُ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿۱۵۶﴾

156. और उसे बुराई (के इरादे) से हाथ मत लगाना वरना बड़े (सख़्त) दिन का अ़ज़ाब तुम्हें आ पकड़ेगा।

فَعَقَرُوْهَا فَاَصْبَحُوْا نٰدِمِيْنَ ﴿۱۵۷﴾

157. फिर उन्होंने उसकी कौंचे काट डालीं (सो उसे हलाक कर दिया) फिर वोह (अपने किए पर) पशेमान हो गए।

فَاَخَذَهُمُ الْعَذَابُ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۱۵۸﴾

158. सो उन्हें अ़ज़ाबने आ पकड़ा बेशक इस (वाक़िए़) में बड़ी निशानी है, और उनमें से अक्सर लोग मोमिन न थे।

وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿۱۵۹﴾ ع ۸ ۱۹ ۱۲

159. और बेशक आपका रब ही बड़ा ग़ालिब रह़मत वाला है।

كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوْطِ ِۨالْمُرْسَلِيْنَ ﴿۱۶۰﴾

160. कौमे लूत ने (भी) पयग़म्बरों को झुटलाया।

اِذْ قَالَ لَهُمْ اَخُوْهُمْ لُوْطٌ اَلَا

161. जब उनसे उनकी (कौमी) भाई लूत (ﷺ) ने

تَتَّقُوْنَ ﴿۱۶۱﴾ ج

फ़रमाया : क्या तुम (अल्लाह से) डरते नहीं हो।

اِنِّیْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِیْنٌ ﴿۱۶۲﴾ لا

162. बेशक मैं तुम्हारे लिए अमानतदार रसूल (बन कर आया) हूं।

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِیْعُوْنِ ﴿۱۶۳﴾ ج

163. पस तुम अल्लाहसे डरो और मेरी इताअ़त इख़्तियार करो।

وَمَاۤ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَیْهِ مِنْ اَجْرٍ ۚ اِنْ اَجْرِیَ اِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۱۶۴﴾ ط

164. और मैं तुमसे इस (तबलीग़े हक़) पर कोई उजरत तलब नहीं करता, मेरा अज्र तो सिर्फ़ तमाम जहानों के रब के ज़िम्मे है।

اَتَاْتُوْنَ الذُّكْرَانَ مِنَ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۱۶۵﴾ لا

165. क्या तुम सारे जहानवालों में से सिर्फ़ मर्दों ही के पास (अपनी शहवानी ख़्वाहिशात पूरी करने के लिए) आते हो ?

وَتَذَرُوْنَ مَا خَلَقَ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ ؕ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ عٰدُوْنَ ﴿۱۶۶﴾

166. और अपनी बीवियों को छोड़ देते हो जो तुम्हारे रबने तुम्हारे लिए पैदा की हैं, बल्कि तुम (सरकशी में) हदसे निकल जानेवाले लोग हो।

قَالُوْا لَىِٕنْ لَّمْ تَنْتَهِ یٰلُوْطُ لَتَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُخْرَجِیْنَ ﴿۱۶۷﴾

167. वोह बोले : ए लूत ! अगर तुम (इन बातों से) बाज़ न आए तो तुम ज़ररू शहर बदर किए जानेवालों में से हो जाओगे।

قَالَ اِنِّیْ لِعَمَلِكُمْ مِّنَ الْقَالِیْنَ ﴿۱۶۸﴾ ط

168. (लूत علیہ السلام ने) फ़रमाया : बेशक मैं तुम्हारे अ़मलसे बेज़ार होनेवालों में से हूं।

رَبِّ نَجِّنِیْ وَاَهْلِیْ مِمَّا یَعْمَلُوْنَ ﴿۱۶۹﴾

169. ऐ रब ! तू मुझे और मेरे घर वालों को उस (काम के वबाल) से नजात अ़ता फ़रमा जो येह कर रहे हैं।

فَنَجَّیْنٰهُ وَاَهْلَهٗۤ اَجْمَعِیْنَ ﴿۱۷۰﴾ لا

170. पस हमने उनको और उनके सब घरवालों को नजात अ़ता फ़रमा दी।

اِلَّا عَجُوْزًا فِی الْغٰبِرِیْنَ ﴿۱۷۱﴾ ج

171. सिवाए एक बूढ़ी औ़रत के जो पीछे रेह जानेवालों में थी।

ثُمَّ دَمَّرْنَا الْاٰخَرِیْنَ ﴿۱۷۲﴾ ج

172. फिर हमने दूसरों को हलाक कर दिया।

وَاَمۡطَرۡنَا عَلَيۡهِمۡ مَّطَرًا ۚ فَسَآءَ مَطَرُ الۡمُنۡذَرِيۡنَ ﴿۱۷۳﴾

173. और हमने उन पर (पथ्थरों की) बारिश बरसाई सो डराए हुए लोगों की बारिश कितनी तबाह कुन थी।

اِنَّ فِىۡ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ؕ وَمَا كَانَ اَكۡثَرُهُمۡ مُّؤۡمِنِيۡنَ ﴿۱۷۴﴾

174. बेशक इस (वाक़िए) में बड़ी निशानी है और उनके अक्सर लोग मोमिन न थे।

وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الۡعَزِيۡزُ الرَّحِيۡمُ ﴿۱۷۵﴾ ع ۹ ۱۶ ۱۳

175. और बेशक आपका रब ही बड़ा ग़ालिब रहमत वाला है।

كَذَّبَ اَصۡحٰبُ لۡـَٔيۡكَةِ الۡمُرۡسَلِيۡنَ ﴿۱۷۶﴾ ۙ

176. बाशिन्दगाने ऐका (या'नी जंगल के रेहनेवालों) ने (भी) रसूलों को झुटलाया।

اِذۡ قَالَ لَهُمۡ شُعَيۡبٌ اَلَا تَتَّقُوۡنَ ﴿۱۷۷﴾ ۚ

177. जब उनसे शुऐब (عليه السلام) ने फ़रमाया : क्या तुम (अल्लाह से) डरते नहीं हो ?

اِنِّىۡ لَكُمۡ رَسُوۡلٌ اَمِيۡنٌ ﴿۱۷۸﴾ ۙ

178. बेशक मैं तुम्हारे लिए अमानतदार रसूल (बन कर आया) हूं।

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيۡعُوۡنِ ﴿۱۷۹﴾ ۚ

179. पस तुम अल्लाहसे डरो और मेरी फ़रमांबरदारी इख़्तियार करो।

وَمَاۤ اَسۡـَٔلُكُمۡ عَلَيۡهِ مِنۡ اَجۡرٍ ۚ اِنۡ اَجۡرِىَ اِلَّا عَلٰى رَبِّ الۡعٰلَمِيۡنَ ﴿۱۸۰﴾ ؕ

180. और में तुमसे इस (तबलीग़े हक़) पर कोई उजरत नहीं मांगता, मेरा अज्र तो सिर्फ़ तमाम जहानों के रब के ज़िम्मे है।

اَوۡفُوا الۡكَيۡلَ وَلَا تَكُوۡنُوۡا مِنَ الۡمُخۡسِرِيۡنَ ﴿۱۸۱﴾ ۚ

181. तुम पैमाना पूरा भरा करो और (लोगों के हुक़ूक़ को) नुक़्सान पहुंच ने वाले न बनो।

وَزِنُوۡا بِالۡقِسۡطَاسِ الۡمُسۡتَقِيۡمِ ﴿۱۸۲﴾ ۚ

182. और सीधी तराज़ू से तौला करो।

وَلَا تَبۡخَسُوا النَّاسَ اَشۡيَآءَهُمۡ وَلَا تَعۡثَوۡا فِى الۡاَرۡضِ مُفۡسِدِيۡنَ ﴿۱۸۳﴾ ۚ

183. और लोगों को उनकी चीजें कम (तौलके साथ) मत दिया करो और मुल्क में (ऐसी अख़्लाक़ी, माली और समाजी ख़यानतों के ज़रीए) फ़साद अंगेज़ी मत करते फिरो।

وَاتَّقُوا الَّذِىۡ خَلَقَكُمۡ وَالۡجِبِلَّةَ الۡاَوَّلِيۡنَ ﴿۱۸۴﴾ ؕ

184. और उस (अल्लाह) से डरो जिसने तुमको और पेहली उम्मतों को पैदा फ़रमाया।

قَالُوْٓا اِنَّمَآ اَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِيْنَ ﴿۱۸۵﴾

185. वोह के हने लगे : (ऐ शुऐ़ब !) तुम तो महज़ जादूज़दा लोगों में से हो।

وَ مَآ اَنْتَ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا وَ اِنْ نَّظُنُّكَ لَمِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿۱۸۶﴾

186. और तुम फ़क़त हमारे जैसे बशर ही तो हो और हम तुम्हें यक़ीनन झूटे लोगों में से ख़याल करते हैं।

فَاَسْقِطْ عَلَيْنَا كِسَفًا مِّنَ السَّمَآءِ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿۱۸۷﴾

187. पस तुम हमारे उपर आस्मानका कोई टुकड़ा गिरा दो अगर तुम सच्चे हो।

قَالَ رَبِّيْٓ اَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۸۸﴾

188. (शुऐ़ब ﷺ ने) फ़रमाया : मेरा रब उन (कारस्तानियों) को खूब जाननेवाला है जो तुम अंजाम दे रहे हो।

فَكَذَّبُوْهُ فَاَخَذَهُمْ عَذَابُ يَوْمِ الظُّلَّةِ اِنَّهٗ كَانَ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿۱۸۹﴾

189. सो उन्होंने शुऐ़ब (ﷺ) को झुटला दिया पस उन्हें साइबान के दिन के अ़ज़ाबने आ पकड़ा, बेशक वोह ज़बरदस्त दिन का अ़ज़ाब था।

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً وَ مَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿۱۹۰﴾

190. बेशक इस (वाक़िए) में बड़ी निशानी है, और उनके अक्सर लोग मोमिन न थे।

وَ اِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿۱۹۱﴾ ع ۱۰ ۱۶ ۱۴

191. और बेशक आपका रबही बड़ा ग़ालिब रहमतवाला है।

وَ اِنَّهٗ لَتَنْزِيْلُ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۹۲﴾

192. और बेशक येह (कुरआन) सारे जहानों के रब का नाज़िल कर्दह है।

نَزَلَ بِهِ الرُّوْحُ الْاَمِيْنُ ﴿۱۹۳﴾

193. इसे रूहुल अमीन (जिब्राईल ﷺ) ले कर उतरा है।

عَلٰى قَلْبِكَ لِتَكُوْنَ مِنَ الْمُنْذِرِيْنَ ﴿۱۹۴﴾

194. आपके क़ल्बे (अनवर) पर ताकि आप (नाफ़रमानों को) डर सुनानेवालों में से हो जाएं।

بِلِسَانٍ عَرَبِيٍّ مُّبِيْنٍ ﴿۱۹۵﴾

195.(इसका नुज़ूल) फ़सीह़ अ़रबी ज़बान में (हुआ) है।

وَ اِنَّهٗ لَفِيْ زُبُرِ الْاَوَّلِيْنَ ﴿۱۹۶﴾

196. और बेशक येह पेहली उम्मतों के सह़ीफ़ों में (भी मज़कूर) है।

اَوَ لَمْ يَكُنْ لَّهُمْ اٰيَةً اَنْ يَّعْلَمَهٗ

197. और क्या उन के लिए (सदाक़ते कुरआन और

عُلَمٰٓؤُا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۝١٩٧

सदाक़ते नुबुव्वते मुह़म्मदी ﷺ की) येह दलील (काफ़ी) नहीं है कि उसे बनी इसराईल के उ़लमा (भी) जानते हैं।

وَلَوْ نَزَّلْنٰهُ عَلٰى بَعْضِ الْاَعْجَمِيْنَ ۝١٩٨

198. और अगर हम उसे ग़ैर अ़रबी लोगों (या'नी अ़जमियों) में से किसी पर नाज़िल करते।

فَقَرَاَهٗ عَلَيْهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ
مُؤْمِنِيْنَ ۝١٩٩

199. सो वोह उसको उन लोगों पर पढ़ता तो (भी) येह लोग इस पर ईमान लानेवाले न होते।

كَذٰلِكَ سَلَكْنٰهُ فِيْ قُلُوْبِ
الْمُجْرِمِيْنَ ۝٢٠٠

200. इस तरह़ हमने उस (के इन्कार) को मुजरिमों के दिलों में पुख़्तगी से दाख़िल कर दिया है।

لَا يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ
الْاَلِيْمَ ۝٢٠١

201. वोह उस पर ईमान नहीं लाएंगे यहां तक कि दर्दनाक अ़ज़ाब देख लें।

فَيَاْتِيَهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ
لَا يَشْعُرُوْنَ ۝٢٠٢

202. पस वोह (अ़ज़ाब) उन्हें अचानक आ पहुंचेगा और उन्हें शऊ़र (भी) न होगा।

فَيَقُوْلُوْا هَلْ نَحْنُ مُنْظَرُوْنَ ۝٢٠٣

203. तब वोह कहेंगे : क्या हमें मोहलत दी जाएगी?

اَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُوْنَ ۝٢٠٤

204. क्या येह हमारे अ़ज़ाबमें जल्दी के तलबगार हैं?

اَفَرَءَيْتَ اِنْ مَّتَّعْنٰهُمْ سِنِيْنَ ۝٢٠٥

205. भला बताइए अगर हम उन्हें बरसों फ़ायदाह पहुंचाते रहे।

ثُمَّ جَآءَهُمْ مَّا كَانُوْا يُوْعَدُوْنَ ۝٢٠٦

206. फिर उनके पास वोह (अ़ज़ाब) आ पहुंचे जिसका उन्से वा'दाह किया जा रहा है।

مَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يُمَتَّعُوْنَ ۝٢٠٧

207. (तो) वोह चीजें (उनसे अ़ज़ाब को दफ़ा करने में) क्या काम आएंगी जिनसे वोह फ़ायदाह उठाते रहे थे।

وَمَآ اَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ اِلَّا لَهَا
مُنْذِرُوْنَ ۝٢٠٨ ع

208. और हमने सिवाए उन (बस्तियों) के जिनके लिए डरानेवाले (आ चुके) थे किसी बस्ती को हलाक नहीं किया।

ذِكْرٰى ۛ وَمَا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ۝٢٠٩

209. (और येह भी) नसीह़त के लिए और हम ज़ालिम न थे।

وَمَا تَنَزَّلَتْ بِهِ الشَّيٰطِيْنُ ﴿٢١٠﴾

210. और शैतान इस (कुरआन) को ले कर नहीं उतरे।

وَمَا يَنْۢبَغِيْ لَهُمْ وَمَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ﴿٢١١﴾ ط

211. न (येह) उनके लिए सज़ावार है और न वोह (उसकी) ताक़त रख़ते हैं।

اِنَّهُمْ عَنِ السَّمْعِ لَمَعْزُوْلُوْنَ ﴿٢١٢﴾ ط

212. बेशक वोह (इस कलाम के) सुनने से रोक दिऐ गए हैं।

فَلَا تَدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَتَكُوْنَ مِنَ الْمُعَذَّبِيْنَ ﴿٢١٣﴾ ج

213. पस (ऐ बंदे !) तु अल्लाहके साथ किसी दूसरे मा'बूद को न पूजा कर वरना तू अ़ज़ाब याफ़्ता लोगों में से हो जाएगा।

وَاَنْذِرْ عَشِيْرَتَكَ الْاَقْرَبِيْنَ ﴿٢١٤﴾ لا

214. और (ऐ ह़बीबे मुकर्रम !) आप अपने क़रीबी रिश्तेदारों को (हमारे अ़ज़ाबसे) डराइए।

وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢١٥﴾ ج

215. और आप अपना बाज़ूए (रह़मतो शफ़्क़त) उन मोमिनों के लिए बिछा दीजिए जिन्होंने आपकी पैरवी इख़्तियार कर ली है।

فَاِنْ عَصَوْكَ فَقُلْ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٢١٦﴾ ج

216. फिर अगर वोह आपकी नाफ़रमानी करें तो आप फ़रमा दीजिए कि में इन आ'माले (बद) से बेज़ार हूं जो तुम अंजाम दे रहे हो।

وَتَوَكَّلْ عَلَى الْعَزِيْزِ الرَّحِيْمِ ﴿٢١٧﴾ لا

217.और बड़े ग़ालिब महरबान (रब) पर भरोसा रखिए।

الَّذِيْ يَرٰىكَ حِيْنَ تَقُوْمُ ﴿٢١٨﴾ لا

218. जो आपको (रातकी तन्हाइयों में भी) देख़ता है जब आप (नमाज़े तहज्जुद के लिए क़ियाम करते हैं।

وَتَقَلُّبَكَ فِي السّٰجِدِيْنَ ﴿٢١٩﴾

219. और सज्दा गुजारों में (भी) आपका पलटना देखता (रेहता) है।

اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٢٢٠﴾

220. बेशक वोह खूब सुननेवाला जाननेवाला है।

هَلْ اُنَبِّئُكُمْ عَلٰى مَنْ تَنَزَّلُ الشَّيٰطِيْنُ ﴿٢٢١﴾ ط

221.क्या मैं तुम्हें बताऊं कि शयातीन किस पर उतरते हैं ?

تَنَزَّلُ عَلٰى كُلِّ اَفَّاكٍ اَثِيْمٍ ﴿٢٢٢﴾ لا

222. वोह हर झुठे (बोहतान तराज़) गुनाहगार पर उतरा करते हैं।

يُلْقُوْنَ السَّمْعَ وَاَكْثَرُهُمْ كٰذِبُوْنَ ﴿٢٢٣﴾

223. जो सुनी सुनाई बातें (उनके कानों में) डाल देते हैं और उन में से अक्सर झूटे होते हैं।

وَالشُّعَرَآءُ يَتَّبِعُهُمُ الْغَاوٗنَ ﴿٢٢٤﴾

224. और शाइरों की पैरवी बेहके हूए लोग ही करते हैं।

اَلَمْ تَرَ اَنَّهُمْ فِيْ كُلِّ وَادٍ يَّهِيْمُوْنَ ﴿٢٢٥﴾

225. क्या तुमने नहीं देखा के वोह (शोअरा) हर वादिए (ख़्याल) में (यूंही) सरगरदां फ़िरते रेहते हैं (उन्हें हक़ में सच्ची दिलचस्पी और संजीदगी नहीं होती बल्कि फ़क़त लफजी-व-फ़िक्री जौलानियों में मस्त और खुश रेहते हैं)।

وَاَنَّهُمْ يَقُوْلُوْنَ مَا لَا يَفْعَلُوْنَ ﴿٢٢٦﴾

226. और येह के वोह (ऐसी बातें) केहते हैं जिन्हें (खुद) करते नहीं हैं।

اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَ ذَكَرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا وَّانْتَصَرُوْا مِنْۢ بَعْدِ مَا ظُلِمُوْا ؕ وَ سَيَعْلَمُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْۤا اَيَّ مُنْقَلَبٍ يَّنْقَلِبُوْنَ ﴿٢٢٧﴾ ع ١١ ٣٦ ١٥

227. सिवाए उन (शोअरा) के जो ईमान लाए और नेक अ़मल करते रहे और अल्लाहको कसरत से याद करते रहे (या'नी अल्लाह और रसूल ﷺ के मदह ख़्वां बन गए) और अपने ऊपर जुल्म होने के बाद (जालिमों से बजबाने शे'र) इन्तेकाम लिया (और अपने कलाम के ज़रीए इस्लाम और मजलूमों का दिफ़ा किया बल्कि उनका जौश बढ़ाया तो येह शाइरी मजमूम नहीं), और वोह लोग जिन्होंने जुल्म किया अ़न क़रीब जान लेंगे वोह (मरने के बाद) कौन सी पलटने की जगह पलट कर जाते हैं।

आयातुहा 93 | 27 सूरतुन नम्लि मक्किय्यतुन 48 | रुकूआ़तुहा 7

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाहके नाम से शुरूअ जो निहायत महरबान हमेशा रहम फ़रमाने वाला है।

طٰسٓ ۚ تِلْكَ اٰيٰتُ الْقُرْاٰنِ وَكِتَابٍ مُّبِيْنٍ ﴿١﴾

1. तासीन (हक़ीक़ी मा'ना अल्लाह और रसूल ﷺ ही बेहतर जानते हैं), येह कुरआन और रौशन किताब की आयतें हैं।

هُدًى وَّبُشْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ۝٢

2. (जो) हिदायत है और (ऐसे) ईमानवालों के लिए खुशख़बरी है।

الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَ هُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ۝٣

3. जो नमाज़ क़ाइम करते हैं और जकात अदा करते हैं और वोही हैं जो आख़िरत पर (भी) यक़ीन रखते हैं।

اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ زَيَّنَّا لَهُمْ اَعْمَالَهُمْ فَهُمْ يَعْمَهُوْنَ ۝٤

4. बेशक जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते हमने उनके आ'माले (बद उनकी निगाहोंमें) खुशनुमा कर दिए हैं सो वोह (गुमराही में) सरगर्दां रेहते हैं।

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَهُمْ سُوْٓءُ الْعَذَابِ وَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ هُمُ الْاَخْسَرُوْنَ ۝٥

5. यही वोह लोग हैं जिन के लिए बुरा अज़ाब है और येही लोग आख़िरत में (सब से) ज़ियादह नुक़्सान उठानेवाले हैं।

وَ اِنَّكَ لَتُلَقَّى الْقُرْاٰنَ مِنْ لَّدُنْ حَكِيْمٍ عَلِيْمٍ ۝٦

6. और बेशक आपको (येह) कुरआन बड़े हिक्मत वाले, इल्मवाले (रब) की तरफ़से सिखाया जा रहा है।

اِذْ قَالَ مُوْسٰى لِاَهْلِهٖٓ اِنِّيْٓ اٰنَسْتُ نَارًا سَاٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِخَبَرٍ اَوْ اٰتِيْكُمْ بِشِهَابٍ قَبَسٍ لَّعَلَّكُمْ تَصْطَلُوْنَ ۝٧

7. (वोह वाक़िआ याद करें) जब मूसा (عليه السلام) ने अपनी अहलीया से फ़रमाया के मैंने एक आग देखी है (या मुझे एक आगमें शौलए उन्सो मुहोब्बत नज़र आया है), अनक़रीब में तुम्हारे पास उसमें से कोई ख़बर लाता हूं (जिसके लिए मुद्दतसे दश्तो बयांबां में फिर रहे हैं) या तुम्हें (भी उस में से) कोई चमकता हुआ अंगारा ला देता हूं ताकि तुम (भी) उसकी हरारतसे) तप उठो।

فَلَمَّا جَآءَهَا نُوْدِيَ اَنْۢ بُوْرِكَ مَنْ فِي النَّارِ وَمَنْ حَوْلَهَا وَ سُبْحٰنَ اللّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝٨

8. फिर जब वोह उसके पास आ पहुंचे तो आवाज़ दी गई के बा बरकत है जो इस आग में (अपने हिजाबे नूरकी तजल्ली फ़रमा रहा) है और वोह (भी) जो उसके आसपास (उलूही जल्वों के परतव में) है, और अल्लाह (हर क़िस्म के जिस्मो मिसाल से) पाक है जो सारे जहानों का रब है।

يٰمُوْسٰۤى اِنَّهٗۤ اَنَا اللّٰهُ الْعَزِيْزُ
الْحَكِيْمُ ۙ ۝٩

9. ऐ मूसा ! बेशक वोह (जल्वा फ़रमानेवाला) मैं ही अल्लाह हूं जो निहायत ग़ालिब हिक्मत वाला है।

وَاَلْقِ عَصَاكَ ؕ فَلَمَّا رَاٰهَا تَهْتَزُّ
كَاَنَّهَا جَآنٌّ وَّلّٰى مُدْبِرًا وَّ لَمْ
يُعَقِّبْ ؕ يٰمُوْسٰى لَا تَخَفْ ۟ اِنِّىْ
لَا يَخَافُ لَدَىَّ الْمُرْسَلُوْنَ ۝١٠

10. और (ऐ मूसा!) अपनी लाठी (ज़मीन पर) डाल दो, फिर जब (मूसाने लाठीको ज़मीन पर डालने के बाद) उसे देखा कि सांप की मानिन्द तेज़ हरकत कर रही है तो (फित्री रद्दे अ़मल के तौर पर) पीठ फेर कर भागे और पीछे मुड़ कर (भी) न देखा (इर्शाद हूआ) : ऐ मूसा ! ख़ौफ़ न करो बेशक पयग़म्बर मेरे हुज़ूर डरा नहीं करते।

اِلَّا مَنْ ظَلَمَ ثُمَّ بَدَّلَ حُسْنًا ۢ بَعْدَ
سُوْٓءٍ فَاِنِّىْ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝١١

11. मगर जिसने ज़ुल्म किया फिर बुराई के बाद (उसे) नेकीसे बदल दिया तो बेशक मैं बड़ा बख़्शनेवाला निहायत महरबान हूं।

وَاَدْخِلْ يَدَكَ فِىْ جَيْبِكَ تَخْرُجْ
بَيْضَآءَ مِنْ غَيْرِ سُوْٓءٍ ۟ فِىْ تِسْعِ
اٰيٰتٍ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَقَوْمِهٖ ؕ اِنَّهُمْ
كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ۝١٢

12. और तुम अपना हाथ अपने गिरेबान के अंदर डालो वोह बिग़ैर किसी अैबके सफ़ेद चमकदार (हो कर) निकलेगा (येह दोनों अल्लाहकी उन) नौ निशानियों में (से) हैं (उन्हें ले कर) फ़िरऔन और उसकी क़ौमके पास जाओ। बेशक वोह ना फ़रमान क़ौम हैं।

فَلَمَّا جَآءَتْهُمْ اٰيٰتُنَا مُبْصِرَةً قَالُوْا
هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۚ ۝١٣

13. फिर जब उनके पास हमारी निशानियां वाज़ेह़ और रौशन हो कर पहुंच गईं तो वोह केहने लगे के येह खुला जादू है।

وَجَحَدُوْا بِهَا وَاسْتَيْقَنَتْهَاۤ
اَنْفُسُهُمْ ظُلْمًا وَّعُلُوًّا ؕ فَانْظُرْ كَيْفَ
كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِيْنَ ۝١٤ ع

14. और उन्होंने ज़ुल्म और तकब्बुर के तौर पर उनका सरासर इन्कार कर दिया ह़ालांकि उनके दिल उन (निशानियों के ह़क़ होने) का यक़ीन कर चुके थे। पस आप देखिए के फ़साद बपा करने वालों का कैसा (बुरा) अंजाम हूआ।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا دَاوٗدَ وَسُلَيْمٰنَ عِلْمًا ۚ
وَقَالَا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ فَضَّلَنَا عَلٰى
كَثِيْرٍ مِّنْ عِبَادِهِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝١٥

15. और बेशक हमने दाऊद और सुलैमान (عليهما السلام) को (ग़ैर मामूली) इल्म अता किया, और दोनों ने कहा के सारी ता'रीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं जिसने हमें अपने बहुतसे मोमिन बंदों पर फ़ज़ीलत बख़्शी है।

وَوَرِثَ سُلَيْمٰنُ دَاوٗدَ وَقَالَ يٰٓاَيُّهَا
النَّاسُ عُلِّمْنَا مَنْطِقَ الطَّيْرِ وَاُوْتِيْنَا
مِنْ كُلِّ شَيْءٍ ؕ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ
الْفَضْلُ الْمُبِيْنُ ﴿١٦﴾

16. और सुलैमान (عليه السلام), दाऊद (عليه السلام) के जानशीन हूए और उन्होंने कहा : ऐ लोगो ! हमें परिन्दोंकी बोली (भी) सिखाई गई है और हमें हर चीज अ़ता की गई है। बेशक येह (अल्लाह का) वाज़ेह़ फ़ज़्ल है।

وَحُشِرَ لِسُلَيْمٰنَ جُنُوْدُهٗ مِنَ الْجِنِّ
وَالْاِنْسِ وَالطَّيْرِ فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ﴿١٧﴾

17. और सुलैमान (عليه السلام) के लिए उनके लश्कर जिन्नों और इन्सानों और परिन्दों (की तमाम जिन्सों) में से जमा' किए गएथे, चुनान्चे वोह बगर्जे नज़्मो तर्बियत (उनकी ख़िकदमत में) रोके जाते थे।

حَتّٰٓى اِذَآ اَتَوْا عَلٰى وَادِ النَّمْلِ ۙ
قَالَتْ نَمْلَةٌ يّٰٓاَيُّهَا النَّمْلُ ادْخُلُوْا
مَسٰكِنَكُمْ ۚ لَا يَحْطِمَنَّكُمْ سُلَيْمٰنُ
وَجُنُوْدُهٗ ۙ وَهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿١٨﴾

18. यहां तककि जब वोह (लश्कर) च्यूंटियों के मेदान पर पहुंचे तो एक च्यूंटी केहने लगी : ऐ च्यूंटियो ! अपनी रिहाईशगाहों में दाखिल हो जाओ कहीं सुलैमान (عليه السلام) और उनके लश्कर तुम्हें कुचल न दें इस ह़ालमें किउन्हें खबर भी न हो।

فَتَبَسَّمَ ضَاحِكًا مِّنْ قَوْلِهَا وَقَالَ
رَبِّ اَوْزِعْنِيْٓ اَنْ اَشْكُرَ نِعْمَتَكَ
الَّتِيْٓ اَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلٰى وَالِدَيَّ وَاَنْ
اَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضٰىهُ وَاَدْخِلْنِيْ
بِرَحْمَتِكَ فِيْ عِبَادِكَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٩﴾

19. तो वोह (या'नी सुलैमान عليه السلام) इस (च्यूंटी) की बात से हंसी के साथ मुस्कुराऐ और अर्ज किया : ऐ परवरदिगार ! मुझे अपनी तौफ़ीक़ से इसबात पर क़ायम रख कि मैं तेरी इस ने'मतका शुक्र बजा लाता रहूं जो तुने मुझ पर और मेरे वालिदैन पर इनाम फ़रमाई है और में ऐसे नेक अ़मल करता रहूं जिनसे तू राज़ी होता है और मुझे अपनी रहमतसे अपने खास कुर्बवाले नेकूकार बंदों में दाख़िल फ़रमा ले।

وَتَفَقَّدَ الطَّيْرَ فَقَالَ مَا لِيَ لَآ اَرَى
الْهُدْهُدَ ۖ اَمْ كَانَ مِنَ الْغَآئِبِيْنَ ﴿٢٠﴾

20. और सुलैमान (عليه السلام) ने परिन्दों का जाइज़ा लिया तो केहने लगे : मुझे क्या हुआ है कि में हुद हुद को नहीं देख पा रहा या वोह (वाक़ई) ग़ाइब हो गया है।

لَاُعَذِّبَنَّهٗ عَذَابًا شَدِيْدًا اَوْ

21. मैं उसे (बिगैर इजाज़त ग़ाइब होने पर) ज़रूर सख़्त

لَاَاُعَذِّبَنَّهٗ عَذَابًا شَدِيْدًا اَوْ لَاَاْذْبَحَنَّهٗٓ اَوْ لَيَاْتِيَنِّيْ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿٢١﴾

सज़ा दूंगा या उसे ज़रूर ज़ब्ह कर डालूंगा या वोह मेरे पास (अपने बेकसूर होने की) वाजेह दलील लाएगा।

فَمَكَثَ غَيْرَ بَعِيْدٍ فَقَالَ اَحَطْتُّ بِمَا لَمْ تُحِطْ بِهٖ وَجِئْتُكَ مِنْ سَبَاٍ بِنَبَاٍ يَّقِيْنٍ ﴿٢٢﴾

22. पस वोह थोडी ही देर (बाहर) ठेहरा था कि उसने (हाज़िर हो कर) अर्ज किया : मुझे एक ऐसी बात मा' लूम हूई है जिस पर (शायद) आप मुत्तला' न थे और मैं आपके पास (मुल्के) सबासे एक यक़ीनी खबर लाया हूं।

اِنِّيْ وَجَدْتُّ امْرَاَةً تَمْلِكُهُمْ وَاُوْتِيَتْ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ وَّلَهَا عَرْشٌ عَظِيْمٌ ﴿٢٣﴾

23. मैं ने (वहां) एक ऐसी औरतको पाया है जो उन (या'नी मुल्के सबा के बाशिन्दों) पर हुकूमत करती है और उसे (मिल्कियतो इक़्तिदार में) हर एक चीज बख्शी गई है और उसके पास बहुत बड़ा तख़्त है।

وَجَدْتُّهَا وَقَوْمَهَا يَسْجُدُوْنَ لِلشَّمْسِ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ فَهُمْ لَا يَهْتَدُوْنَ ﴿٢٤﴾

24. में ने उसे और उसकी कौमको अल्लाह के बजाए सूरजको सज्दा करते पाया है और शैतानने उनके आ'माले (बद) उनके लिए खूब खूशनुमा बना दिए हैं और उन्हें (तौहीद की) राहसे रोक दिया है सो वोह हिदायत नहीं पा रहे।

اَلَّا يَسْجُدُوْا لِلّٰهِ الَّذِيْ يُخْرِجُ الْخَبْءَ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُخْفُوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ ﴿٢٥﴾

25. इसलिए (रोके गऐ हैं) के वोह इस अल्लाहके हुजूर सज्दा रैज़ न हों जो आस्मानों और ज़मीन में पोशीदा (हकाइक और मौजूदात) को बाहर निकालता (या'नी ज़ाहिर करता) है और उन (सब) चीज़ोंको जानता है जिसे तुम छुपाते हो और जिसे तुम आश्कार करते हो।

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ﴿٢٦﴾ السجدة

26. अल्लाहके सिवा कोई लाइके इबादत नहीं (वोही) अज़ीम तख्ते इक़्तिदार का मालिक है।

السجدة ٨

قَالَ سَنَنْظُرُ اَصَدَقْتَ اَمْ كُنْتَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿٢٧﴾

27. (सुलैमान (عليه السلام) ने) फ़रमाया : हम अभी देखते हैं क्या तू सच केह रहा है या झूट बोलने वालों से है।

اِذْهَبْ بِّكِتٰبِيْ هٰذَا فَاَلْقِهْ اِلَيْهِمْ ثُمَّ تَوَلَّ عَنْهُمْ فَانْظُرْ مَاذَا يَرْجِعُوْنَ ﴿٢٨﴾

28. मेरा येह खत लेजा और उसे उनकी तरफ़ डाल दे फिर उनके पाससे हट आ फिर देख वोह किस बातकी तरफ़ रुजूअ़ करते हैं।

قَالَتْ يٰٓاَيُّهَا الْمَلَؤُا اِنِّيْٓ اُلْقِيَ اِلَيَّ كِتٰبٌ كَرِيْمٌ ﴿٢٩﴾

29. (मलिका ने) कहा : ऐ सरदारो ! मेरी तरफ़ एक नामए बुज़ुर्ग डाला गया है।

اِنَّهٗ مِنْ سُلَيْمٰنَ وَ اِنَّهٗ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ﴿٣٠﴾ۙ

30. बेशक वोह (ख़त) सुलैमान (علیہ السلام) की जानिबसे (आया) है और वोह अल्लाहके नामसे शुरु (किया गया) है जो बेहद महरबान बड़ा रहम फ़रमानेवाला है।

اَلَّا تَعْلُوْا عَلَيَّ وَاْتُوْنِيْ مُسْلِمِيْنَ ﴿٣١﴾ ع ٢ ١٧

31. (इसका मजमून येह है) कि तुम लोग मुझ पर सर बुलंदी (की कोशिश) मत करो और फ़रमांबरदार हो कर मेरे पास आ जाओ।

قَالَتْ يٰٓاَيُّهَا الْمَلَؤُا اَفْتُوْنِيْ فِيْٓ اَمْرِيْ ۚ مَا كُنْتُ قَاطِعَةً اَمْرًا حَتّٰى تَشْهَدُوْنِ ﴿٣٢﴾

32. (मलिका ने) कहा : ऐ दरबार वालो ! तुम मुझे मेरे (इस) मुआ़मले में मशवरा दो मैं किसी काम का क़तई फ़ैसला करने वाली नहीं हूं यहां तक कि तुम मेरे पास हाज़िर हो कर (इस अम्र के मुवाफ़िक़ या मुख़ालिफ) गवाही दो।

قَالُوْا نَحْنُ اُولُوْا قُوَّةٍ وَّاُولُوْا بَاْسٍ شَدِيْدٍ ۙ وَّ الْاَمْرُ اِلَيْكِ فَانْظُرِيْ مَاذَا تَاْمُرِيْنَ ﴿٣٣﴾

33. उन्होंने कहा : हम ताक़तवर और सख्त जंगजू हैं मगर हुक्म आपके इख़्तियार में है सो आप (खुद ही) ग़ौर कर लें के आप क्या हुक्म देती है।

قَالَتْ اِنَّ الْمُلُوْكَ اِذَا دَخَلُوْا قَرْيَةً اَفْسَدُوْهَا وَ جَعَلُوْٓا اَعِزَّةَ اَهْلِهَآ اَذِلَّةً ۚ وَكَذٰلِكَ يَفْعَلُوْنَ ﴿٣٤﴾

34. (मलिका ने) कहा : बेशक जब बादशाहकी बस्तीमें दाख़िल होते हैं तो उसे तबाहो बरबाद कर देते हैं और वहां के बा इ़ज़्ज़त लोगों को ज़लीलो रुस्वा कर डालते हैं और येह (लोग भी) इसी तरह करेंगे।

وَ اِنِّيْ مُرْسِلَةٌ اِلَيْهِمْ بِهَدِيَّةٍ فَنٰظِرَةٌۢ بِمَ يَرْجِعُ الْمُرْسَلُوْنَ ﴿٣٥﴾

35. और बेशक मैं उनकी तरफ़ कुछ तोह़फ़ा भेजनेवाली हूं फिर देखती हूं क़ासिद क्या जवाब ले कर वापस लौटते हैं।

فَلَمَّا جَآءَ سُلَيْمٰنَ قَالَ اَتُمِدُّوْنَنِ
بِمَالٍ ۫ فَمَآ اٰتٰنِۦَ اللّٰهُ خَيْرٌ مِّمَّآ
اٰتٰىكُمْ ۚ بَلْ اَنْتُمْ بِهَدِيَّتِكُمْ
تَفْرَحُوْنَ ﴿٣٦﴾

36. सो जब वोह (क़ासिद) सुलैमान (عليه السلام) के पास आया (तो सुलैमान عليه السلام ने उससे) फ़रमाया : क्या तुम लोग मालो दौलतसे मेरी मदद करना चाहते हो। सो जो कुछ अल्लाहने मुझे अ़ता फ़रमाया है उस (दौलत) से बेहतर है जो उसने तुम्हें अ़ता की है बल्कि तुमही हो जो अपने तोहफ़े से फरहां (और) नाजां हो।

اِرْجِعْ اِلَيْهِمْ فَلَنَاْتِيَنَّهُمْ بِجُنُوْدٍ
لَّا قِبَلَ لَهُمْ بِهَا وَلَنُخْرِجَنَّهُمْ مِّنْهَآ
اَذِلَّةً وَّهُمْ صٰغِرُوْنَ ﴿٣٧﴾

37. तो उनके पास (तोहफें समैत) वापस पलट जा सो हम उन पर ऐसे लश्करों के साथ (हुमला करने) आएंगे जिनसे उन्हें मुक़ाबले (की ताकत) नहीं होगी और हम उन्हें वहां से बे इ़ज़्ज़त करके इस ह़ाल में निकालेंगे के वोह (कैदी बन कर) रुस्वा होंगे।

قَالَ يٰٓاَيُّهَا الْمَلَؤُا اَيُّكُمْ يَاْتِيْنِيْ
بِعَرْشِهَا قَبْلَ اَنْ يَّاْتُوْنِيْ
مُسْلِمِيْنَ ﴿٣٨﴾

38. (सुलैमान عليه السلام ने) फ़रमाया : ऐ दरबार वालो ! तुम में से कौन उस (मलिका) का तख़्त मेरे पास ला सक्ता है कब्ल उसके के वोह लोग फ़रमांबरदार हो कर मेरे पास आ जाएं।

قَالَ عِفْرِيْتٌ مِّنَ الْجِنِّ اَنَا اٰتِيْكَ
بِهٖ قَبْلَ اَنْ تَقُوْمَ مِنْ مَّقَامِكَ ۚ
وَاِنِّيْ عَلَيْهِ لَقَوِيٌّ اَمِيْنٌ ﴿٣٩﴾

39. एक क़वी हैकल जिन ने अ़र्ज़ किया : में उसे आपके पास ला सक्ता हूं क़ब्ल उसके केआप अपने मुक़ामसे उठें और बेशक मैं उस (के लाने) पर ताकतवर (और) अमानतदार हूं।

قَالَ الَّذِيْ عِنْدَهٗ عِلْمٌ مِّنَ الْكِتٰبِ
اَنَا اٰتِيْكَ بِهٖ قَبْلَ اَنْ يَّرْتَدَّ اِلَيْكَ
طَرْفُكَ ؕ فَلَمَّا رَاٰهُ مُسْتَقِرًّا عِنْدَهٗ
قَالَ هٰذَا مِنْ فَضْلِ رَبِّيْ ۖ
لِيَبْلُوَنِيْٓ ءَاَشْكُرُ اَمْ اَكْفُرُ ؕ وَمَنْ
شَكَرَ فَاِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ كَفَرَ

40. (फिर) एक ऐसे शख़्सने अ़र्ज़ किया जिसके पास (आस्मानी) किताबका कुछ इल्म था कि में उसे आपके पास ला सक्ता हूं कब्ल उसकेके आपकी निगाह आपकी तरफ़ पलटे (या'नी पलक झपकने से भी पेहले), फिर जब (सुलैमान عليه السلام ने) उस (तख़्त) को अपने पास रखा हूवा देखा (तो) कहा : येह मेरे रबका फ़ज़्ल है ताकि वोह मुझे आज़माए कि आया मैं शुक्रगुज़ारी करता हूं या नाशुक्री, और जिसने (अल्लाहका) शुक्र अदा किया सो वोह महज़ अपनी ही ज़ात के फ़ाइदे के लिए शुक्रमंदी

فَاِنَّ رَبِّیْ غَنِیٌّ كَرِیْمٌ ﴿۴۰﴾

करता है और जिसने नाशुक्री की तो बेशक मेरा रब बेनियाज़, करम फ़रमाने वाला है।

قَالَ نَكِّرُوْا لَهَا عَرْشَهَا نَنْظُرْ اَتَهْتَدِیْۤ اَمْ تَكُوْنُ مِنَ الَّذِیْنَ لَا یَهْتَدُوْنَ ﴿۴۱﴾

41. (सुलैमान ﷺ ने) फ़रमाया : उस (मलिका के इम्तेहान) के लिए उसके तख़्त की सूरत और हैअत बदल दो हम देखेंगे कि आया वोह (पहेचानकी) राह पाती है या उनमें से होती है जो सूझबूझ नहीं रखते।

فَلَمَّا جَآءَتْ قِیْلَ اَهٰكَذَا عَرْشُكِ ؕ قَالَتْ كَاَنَّهٗ هُوَ ۚ وَ اُوْتِیْنَا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهَا وَ كُنَّا مُسْلِمِیْنَ ﴿۴۲﴾

42. फिर जब वोह (मलिका) आई तो उससे कहा गया : क्या तुम्हारा तख़्त इसी तरह का है, वोह केहने लगी : गोया येह वोही है और हमें इससे पहले ही (नुबुव्वते सुलैमान के हक़ होनेका) इल्म हो चुका था और हम मुसलमान हो चुके हैं।

وَ صَدَّهَا مَا كَانَتْ تَّعْبُدُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ اِنَّهَا كَانَتْ مِنْ قَوْمٍ كٰفِرِیْنَ ﴿۴۳﴾

43. और उस (मलिका) को उस (मा'बूदे बातिल) ने (पहले क़ुबूले हक़से) रोक रखा था जिसकी वोह अल्लाह के सिवा परस्तिश करती रही थी। बेशक वोह काफ़िरों की क़ौममें से थी।

قِیْلَ لَهَا ادْخُلِی الصَّرْحَ ۚ فَلَمَّا رَاَتْهُ حَسِبَتْهُ لُجَّةً وَّ كَشَفَتْ عَنْ سَاقَیْهَا ؕ قَالَ اِنَّهٗ صَرْحٌ مُّمَرَّدٌ مِّنْ قَوَارِیْرَ ؕ قَالَتْ رَبِّ اِنِّیْ ظَلَمْتُ نَفْسِیْ وَ اَسْلَمْتُ مَعَ سُلَیْمٰنَ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۴۴﴾ ع ۳ ۱۸

44. उस (मलिका) से कहा गया : इस महलके सहनमें दाख़िल हो जा (जिसके नीचे नीलगूं पानी की लेहरें चलती थीं) फिर जब मलिकाने उस (मुज़य्यन बिल्लोरीं फ़र्श) को देखा तो उसे गेहरे पानीका तालाब समझा और उसने (पाईंचे उठा कर) अपनी दोनों पिंडलियां खोल दीं, सुलैमान (ﷺ) ने फ़रमाया : येह तो महलका शीशों जड़ा सहन है उस (मलिका)ने अ़र्ज़ किया : ऐ मेरे परवरदिगार ! (मैं इसी तरह फ़रेबे नज़र में मुब्तिला थी) बेशक मैंने अपनी जान पर ज़ुल्म किया और अब मैं सुलैमान (ﷺ) की मइय्यत में उस अल्लाह की फ़रमांबरदार हो गई हूं जो तमाम जहानों का रब है।

وَ لَقَدْ اَرْسَلْنَاۤ اِلٰی ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ

45. और बेशक हमने क़ौमे समूद के पास उनके (कौमी)

صٰلِحًا اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ فَاِذَا هُمْ فَرِيْقٰنِ يَخْتَصِمُوْنَ ﴿٤٥﴾

भाई सालेह (عليه السلام) को पयग़म्बर बना कर) भेजा कि तुम लोग अल्लाहकी इबादत करो तो उस वक़्त वोह दो फ़िर्क़े हो गए जो आपस में झगड़ते थे।

قَالَ يٰقَوْمِ لِمَ تَسْتَعْجِلُوْنَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ ۚ لَوْلَا تَسْتَغْفِرُوْنَ اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿٤٦﴾

46. (सालेह عليه السلام ने) : फ़रमाया ऐ मेरी क़ौम! तुम लोग भलाई (या'नी रह़मत) से पहले बुराई (या'नी अ़ज़ाब) में क्यों जल्दी चाहते हो ? तुम अल्लाहसे बख़्शिश क्यों तलब नहीं करते ताकि तुम पर रह़म किया जाए ?

قَالُوا اطَّيَّرْنَا بِكَ وَبِمَنْ مَّعَكَ ؕ قَالَ طٰٓئِرُكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ تُفْتَنُوْنَ ﴿٤٧﴾

47. वोह केहने लगे : हमें तुमसे (भी) नहूसत पहुंची है और उन लोगों से (भी) जो तुम्हारे साथ हैं (सालेह عليه السلام ने) फ़रमाया : तुम्हारी नहूसत (का सबब) अल्लाह के पास (लिखा हूआ) है बल्कि तुम लोग फ़ित्नेमें मुब्तिला किए गए हो।

وَكَانَ فِي الْمَدِيْنَةِ تِسْعَةُ رَهْطٍ يُّفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ وَلَا يُصْلِحُوْنَ ﴿٤٨﴾

48. और (कौमे समूद के) शहर में नौ सर कर्दह लीडर (जो अपनी अपनी जमाअ़तों के सरबराह) थे मुल्क में फसाद फैलाते थे और इस्लाह़ नहीं करते थे।

قَالُوْا تَقَاسَمُوْا بِاللّٰهِ لَنُبَيِّتَنَّهٗ وَاَهْلَهٗ ثُمَّ لَنَقُوْلَنَّ لِوَلِيِّهٖ مَا شَهِدْنَا مَهْلِكَ اَهْلِهٖ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ﴿٤٩﴾

49. (उन सरग़नों ने) कहा : तुम आपसमें अल्लाहकी क़सम खा कर अ़हद करो कि हम ज़रूर रातको सालेह (عليه السلام) और उसके घरवालों पर क़ातिलाना ह़मला करेंगे फिर उनके वारिसों से केह देंगे कि हम उनकी हलाकत के मौक़े पर ह़ाज़िर ही न थे और बेशक हम सच्चे हैं।

وَمَكَرُوْا مَكْرًا وَّمَكَرْنَا مَكْرًا وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٥٠﴾

50. और उन्होंने खुफ़्या साज़िश की और हमने (भी उसके तोड़ के लिए) खुफ़्या तदबीर फ़रमाई और उन्हें ख़बर भी न हूई।

فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ مَكْرِهِمْ ۙ اَنَّا دَمَّرْنٰهُمْ وَقَوْمَهُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٥١﴾

51. तो आप देखिए कि उनकी (मक्काराना) साज़िश का अंजाम कैसा हुवा बेशक हमने उन (सरदारों) को और उनकी सारी कौमको तबाहो बरबाद कर दिया।

فَتِلْكَ بُيُوْتُهُمْ خَاوِيَةً بِمَا ظَلَمُوْا ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿۵۲﴾

52. सो येह उनके घर वीरान पड़े हैं इस लिए कि उन्होंने जुल्म किया था । बेशक उसमें इस क़ौमके लिए (इब्रतकी) निशानी है जो इल्म रखते हैं।

وَاَنْجَيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ كَانُوْا يَتَّقُوْنَ ﴿۵۳﴾

53. और हमने उन लोगोंको नजात बख़्शी जो ईमान लाए और तक़्वा शिआ़र हुए।

وَلُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖۤ اَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ وَاَنْتُمْ تُبْصِرُوْنَ ﴿۵۴﴾

54. और लूत (علیہ السلام) को (याद करें) जब उन्होंने अपनी क़ौमसे फ़रमाया : क्या तुम बे हयाई का इर्तिकाब करते हो हालां कि तुम देखते (भी) हो।

اَئِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ شَهْوَةً مِّنْ دُوْنِ النِّسَآءِ ؕ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُوْنَ ﴿۵۵﴾

55. क्या तुम अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिश पूरी करने के लिए औ़रतों को छोड़ कर मर्दों के पास जाते हो? बल्कि तुम जाहिल लोग हो।

فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖۤ اِلَّاۤ اَنْ قَالُوْۤا اَخْرِجُوْۤا اٰلَ لُوْطٍ مِّنْ قَرْيَتِكُمْ ۚ اِنَّهُمْ اُنَاسٌ يَّتَطَهَّرُوْنَ ﴿۵۶﴾

56. तो उनकी क़ौमका जवाब इसके सिवा कुछ न था कि वोह केहने लगे : तुम लूत के घरवालों को अपनी बस्ती से निकाल दो येह बड़े पाकबाज़ बनते हैं।

فَاَنْجَيْنٰهُ وَ اَهْلَهٗۤ اِلَّا امْرَاَتَهٗ ۫ قَدَّرْنٰهَا مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿۵۷﴾

57. पस हमने लूत (علیہ السلام) को और उनके घरवालों को नजात बख़्शी सिवाए उनकी बीवी के कि हमने उसे (अ़ज़ाब के लिए) पीछे रेह जानेवालों में से मुक़र्रर कर लिया था।

وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ۚ فَسَآءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِيْنَ ﴿۵۸﴾ ع ۴ ۱۴ ۱۹

58. और हमने उन पर ख़ूब (पथ्थरों की) बारिश बरसाई सो (उन) डराए गए लोगों पर (पथ्थरों की) बारिश निहायत ही बुरी थी।

قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ وَ سَلٰمٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى ؕ آٰللّٰهُ خَيْرٌ اَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿۵۹﴾ ؕ

59. फ़रमा दीजिए कि तमाम ता'रीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं और उसके मुन्तख़ब (बरगुज़ीदा) बंदों पर सलामती हो, क्या अल्लाह ही बेहतर है या वोह (मा'बूदाने बातिला) जिन्हें येह लोग (उसका) शरीक ठेहराते हैं।